गरवी गुजरात

RNI No.: UPHIN/25/A1697

GARVI GUJARAT

# गरवी गुजरात

लखनऊ से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 01
अंक : 198
दि. 19.11.2025,
बुधवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

EDITOR : ASHWANI KUMAR Regd. Office: TF-01, Nanakram Super Market,Ramnagar,Sabarmati, Ahmedabad-380 005. Gujarat, India.

Phone : 90163 33307 (M) 93283 33307, 98253 33307 • Email : garvigujarat2007@gmail.com • Email : garvigujarat2007@yahoo.com • Website : www.garvigujarat.co.in


## राष्ट्रपति ने छठे राष्ट्रीय जल पुरस्कार और जल संचय-जन भागीदारी पुरस्कार प्रदान किये

**प्रभावी जल प्रबंधन केवल व्यक्तियों, परिवारों, समाज और सरकार की भागीदारी से ही संभवः राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु**

(जीएनएस)।

राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु ने आज (18 नवंबर, 2025) नई दिल्ली में आयोजित एक समारोह में छठे राष्ट्रीय जल पुरस्कार और जल संचय-जन भागीदारी पुरस्कार प्रदान किए।

राष्ट्रपति ने इस अवसर पर कहा कि मानव सभ्यता की गाथा नदी घाटियों, समुद्र तटों और विभिन्न जल स्रोतों के आसपास बसे समूहों की कहानी है। हमारी परंपरा में नदियां, झीलें और अन्य जल स्रोत पूजनीय हैं। हमारे राष्ट्रीय गीत में बंकिम चंद्र चटर्जी द्वारा लिखा गया पहला शब्द "सुजलम्" है। इसका अर्थ है "प्रचुर जल संसाधनों से धन्य"। यह तथ्य हमारे देश के लिए जल की प्राथमिकता को दशार्ता है।

राष्ट्रपति ने कहा कि जल का कुशल उपयोग एक वैश्विक अनिवार्यता है। हमारे देश के लिए जल का कुशल उपयोग और भी महत्वपूर्ण है क्योंकि हमारी जनसंख्या की तुलना में हमारे जल संसाधन सीमित हैं। प्रति व्यक्ति जल उपलब्धता एक बड़ी चुनौती है। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि जलवायु परिवर्तन जल चक्र को प्रभावित कर रहा है। ऐसे में, सरकार और जनता को जल उपलब्धता और जल सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए मिलकर काम करना चाहिए।

राष्ट्रपति को यह जानकर प्रसन्नता हुई कि पिछले वर्ष आरंभ की गई जल संचय-जनभागीदारी पहल के तहत 35 लाख से अधिक भूजल पुनर्भरण संरचनाओं का निर्माण किया गया है।

राष्ट्रपति ने कहा कि चक्रीय जल अर्थव्यवस्था प्रणालियों को अपनाकर, सभी उद्योग और अन्य हितधारक जल संसाधनों का प्रभावी उपयोग कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि जल उपचार और पुनःपरिसंचरण के साथ-साथ, कई औद्योगिक इकाइयों ने शून्य द्रव उत्सर्जन का लक्ष्य अर्जित कर लिया है। उन्होंने कहा कि ऐसे प्रयास जल प्रबंधन और संरक्षण के लिए उपयोगी हैं।

राष्ट्रपति ने केंद्र और राज्य सरकारों, जिला प्रशासनों, ग्राम पंचायतों और नगर निकायों के स्तर पर जल संरक्षण और उसके सुसंगत प्रबंधन को प्राथमिकता देने पर बल दिया। उन्हें यह जानकर प्रसन्नता हुई कि कई शैक्षणिक संस्थान, नागरिक

समूह और गैर-सरकारी संगठन भी इस दिशा में योगदान दे रहे हैं। उन्होंने किसानों और उद्यमियों को जल का उपभोग कम करते हुए उत्पादन को अधिकतम करने के नवोन्मेषी तरीके अपनाने की सलाह दी। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि व्यक्तिगत रूप से उत्साहपूर्वक योगदान देने वाले विवेकशील नागरिक भी जल-समृद्धि मूल्य श्रृंखला में महत्वपूर्ण हितधारक हैं। प्रभावी जल प्रबंधन केवल व्यक्तियों, परिवारों, समाज और सरकार की भागीदारी से ही संभव है।

राष्ट्रपति ने कहा कि जल का उपयोग करते समय, सभी को यह स्मरण करना चाहिए कि हम एक अत्यंत मूल्यवान संपत्ति का उपयोग कर रहे हैं। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि जनजातीय समुदाय जल सहित सभी प्राकृतिक संसाधनों का अत्यंत सम्मान करते हैं। उन्होंने कहा कि जल संसाधनों का सर्वाधिक कुशल उपयोग हमारे सभी नागरिकों की जीवनशैली का अभिन्न अंग होना चाहिए। उन्होंने सभी को व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से जल संरक्षण के प्रति निरंतर सतर्क रहने का परामर्श दिया। उन्होंने कहा कि हमारे देश की जन चेतना में जल जागरूकता फैलाना अत्यंत आवश्यक है। जल का संचयन और संरक्षण केवल जनशक्ति के माध्यम से ही संभव है।

राष्ट्रीय जल पुरस्कारों का उद्देश्य लोगों में जल के महत्व के बारे में जागरूकता पैदा करना और उन्हें जल उपयोग की सर्वोत्तम कार्य प्रणालियों को अपनाने के लिए प्रेरित करना है। जल संचय जन भागीदारी (जेएसजेबी) पहल सामुदायिक भागीदारी और संसाधनों के संयोजन के जरिए कृत्रिम भूजल पुनर्भरण के लिए विविध, मापनीय और अनुकरणीय मॉडलों के उद्भव में अग्रणी रही है।

## सीएम योगी ने कहा- वो दौर खत्म...जब पीड़ित तड़पता, भटकता था- अपराधी मौज करते थे; अब अपराधी बच नहीं सकते

गोरखपुर (जीएनएस)।

सीएम योगी ने बताया कि गोरखपुर में अपग्रेडेड फॉरेंसिक साइंस लैब में सभी अत्याधुनिक सुविधाएं होंगी जो सटीक जांच करेंगी। यह लैब मॉडर्न पुलिस के लिए गेम चेंजर साबित होगी। त्वरित और पुख्ता जांच होने से लोगों को समय से सुसंगत न्याय मिलेगा। उन्होंने कहा कि फॉरेंसिक साइंस लैब अपराध और अपराधियों के प्रति जीरो टॉलरेंस नीति का ही हिस्सा हैं।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि 2017 के बाद का नया उत्तर प्रदेश अपराध को कतई स्वीकार नहीं करता है। यदि किसी ने यहां अपराध करने की जुर्रत की तो उसे हरहाल में उसकी कीमत भी चुकानी होगी। वह दौर खत्म हो गया जब पीड़ित तड़पता, भटकता था और अपराधी मौज-मस्ती करते थे।

अब प्रदेश सरकार ने जीरो टॉलरेंस की नीति के तहत साक्ष्य संकलन और फॉरेंसिक साइंस लैब्स (विधि विज्ञान प्रयोगशाला) के जरिए इसके प्रमाणन की ऐसी व्यवस्था सुनिश्चित कर दी है कि कोई भी अपराधी बच नहीं पाएगा।

सीएम योगी मंगलवार को बी से ए क्लास में उच्चीकृत क्षेत्रीय विधि विज्ञान प्रयोगशाला (आरएफएसएल) गोरखपुर के नवीन उच्चीकृत भवन के लोकार्पण समारोह को संबोधित कर रहे थे। छह मंजिला हाईटेक नवीन भवन के निर्माण पर 72.78 करोड़ रुपये की लागत आई है।

उच्चीकृत आरएफएसएल का फीता काटकर उद्घाटन करने और यहां की व्यवस्थाओं का निरीक्षण करने के बाद मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने उपस्थित जनसमूह को संबोधित किया। उन्होंने फॉरेंसिक जांच की अत्याधुनिक सौगात के लिए पूर्वी उत्तर प्रदेश की जनता को बधाई देते हुए कहा कि आबादी के लिहाज से देश का सबसे बड़ा राज्य होने के बावजूद 2017 से पहले उत्तर प्रदेश में सिर्फ चार फॉरेंसिक साइंस लैब थे।

सरकार बनने के बाद उन्होंने यह तय किया कि हर कमिश्नरी में एक फॉरेंसिक साइंस लैब होनी चाहिए। इससे आठ वर्षों में इनकी संख्या बढ़कर 12 हो गई है। छह लैब निमार्णाधीन हैं। जल्द ही सभी कमिश्नरी में फॉरेंसिक साइंस लैब होंगे। इन लैब्स में हर प्रकार की फॉरेंसिक जांच होगी जो साक्ष्य को प्रमाणित कर अपराधियों को कठोर दंड दिलाने का आधार बनेगी।

मुख्यमंत्री ने बताया कि कमिश्नरी स्तर पर फॉरेंसिक साइंस लैब स्थापित करने के साथ सरकार ने हर जिले में फॉरेंसिक साक्ष्य संकलन के लिए दो-दो मोबाइल वैन उपलब्ध कराए हैं। इससे कुछ ही घंटों में पुख्ता साक्ष्य संकलन हो जा रहा है और लैब में उसकी जांच के बाद पीड़ित को सहज और सुगम न्याय मिल जाएगी। अब कोई भी अपराधी बच नहीं पाएगा।

मुख्यमंत्री ने कहा कि 2017 के पहले साक्ष्य इकट्ठे होने पर भी अच्छी फॉरेंसिक साइंस लैब के अभाव में अपराधी बच जाते थे। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मार्गदर्शन में गत वर्ष जुलाई से तीन नए कानून (भारतीय न्याय संहिता 2023, भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता 2023 और भारतीय साक्ष्य संहिता 2023) लागू होने के बाद फॉरेंसिक साइंस लैब्स की उपयोगिता और बढ़ गई है।

नए कानून में सात वर्ष से अधिक कारावास वाले अपराधों में फॉरेंसिक जांच को अनिवार्य कर दिया है। इन कानूनों के लागू होने से काफी पहले ही यूपी सरकार ने लैब्स स्थापित करने की तैयारी शुरू कर दी थी।

फॉरेंसिक साइंस लैब्स से रोजगार का सृजन भी होगा

सीएम योगी ने कहा कि फॉरेंसिक साइंस लैब्स से युवाओं के लिए नए रोजगार का सृजन भी होगा। इसके लिए सरकार ने लखनऊ में यूपी स्टेट इंस्टीट्यूट ऑफ फॉरेंसिक साइंस की स्थापना की है। यहां लैब टेक्नीशियन के लिए सर्टिफिकेट, लैब में साक्ष्य मिलान करने वालों के लिए डिप्लोमा और विशेषज्ञ के लिए डिग्री कोर्स शुरू किए गए हैं।

फॉरेंसिक साइंस लैब्स नए समय में नए अपराधों को रोकने के लिए वैज्ञानिक साक्ष्य उपलब्ध कराने के प्रयासों का हिस्सा हैं।

**प्रधानमंत्री ने वैश्विक जलवायु को लेकर वित्तपोषण को नया रूप देने में भारत के अवसर पर प्रकाश डालने वाला एक लेख साझा किया**

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने केंद्रीय मंत्री श्री भूपेंद्र यादव का एक लेख साझा किया है, जिसमें इस बात पर प्रकाश डाला गया है कि अधिक पारदर्शिता और समान मानकों के साथ वैश्विक जलवायु को लेकर वित्तपोषण को नया रूप देने का एक मजबूत अवसर है।

लेख में भारत के जलवायु को लेकर वित्तपोषण संबंधी वर्गीकरण के मसौदे और बढ़ते घरेलू हरित वित्तपोषण को व्यावहारिक नेतृत्व के उदाहरण के रूप में इंगित किया गया है जो भविष्य के लिए अधिक प्रभावी वैश्विक संरचना का मार्गदर्शन कर सकता है।

## निजी क्षेत्र में उछाल से अंतरिक्ष क्षेत्र में भागीदारी और निवेश के लिए भारत एक पसंदीदा वैश्विक गंतव्य के रूप में उभरा है : डॉ. जितेंद्र सिंह

'अंतरिक्ष' भारत के लिए एक अग्रणी राष्ट्र के रूप में वैश्विक स्थान सुनिश्चित करेगाः डॉ. जितेंद्र सिंह

भारत अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष सम्मेलन (आईआईएससी) 2025 का विषय भारत की नवाचार-संचालित अंतरिक्ष यात्रा को उजागर करेगा : डॉ. जितेंद्र सिंह

गति शक्ति से लेकर टेलीमेडिसिन तक अंतरिक्ष तकनीक अब शासन का केंद्र बिंदु हैः मंत्री

(जीएनएस)।

केंद्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह ने आज कहा कि "अंतरिक्ष" दुनिया में एक अग्रणी राष्ट्र के रूप में भारत के लिए वैश्विक स्थान सुनिश्चित करेगा।

वैश्विक अंतरिक्ष व्यवस्था में भारत की बढ़ती भूमिका की ओर इशारा करते हुए, केंद्रीय मंत्री ने कहा कि भारत अंतरिक्ष क्षेत्र में जुड़ाव और निवेश के लिए एक पसंदीदा वैश्विक गंतव्य के रूप में तेजी से उभर रहा है। उन्होंने आगे कहा कि हाल के महीनों में देश का दौरा करने वाले कई अंतरराष्ट्रीय प्रतिनिधिमंडलों की इस क्षेत्र में बढ़ती रुचि से यह परिलक्षित होता है।

डॉ. जितेंद्र सिंह ने कहा कि भारत का अंतरिक्ष क्षेत्र एक निर्णायक परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है जो इस वर्ष के भारत अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष सम्मेलन (आईआईएससी) 2025 के विषय - "विस्तारित क्षितिज : नए अंतरिक्ष युग में नवाचार, समावेश और लचीलापन" को सीधे दशार्ता है। भारतीय अंतरिक्ष संघ (आईएसपीए) द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में उद्योग जगत के नेताओं, वैश्विक एजेंसियों, राजनयिकों और स्टार्ट-अप्स को संबोधित करते

हुए, उन्होंने कहा कि सरकार द्वारा किए गए सुधारों ने एक सक्षम पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण किया है जहाँ प्रतिभा, प्रौद्योगिकी और निवेश मिलकर भारत की अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था के भविष्य को आकार दे सकते हैं।

केंद्रीय मंत्री ने कहा कि यह विषय वस्तु "बहुत सोच-समझकर तैयार की गई" है क्योंकि यह भारत के तेजी से बढ़ते अंतरिक्ष पारिस्थितिकी तंत्र में दिखाई देने वाली नई ऊर्जा को दशार्ती है। श्री जितेंद्र सिंह ने कहा कि भारत में वैज्ञानिक क्षमता हमेशा से रही है, लेकिन निर्णायक मोड़ तब आया जब नीति निमार्ताओं ने ऐसा माहौल बनाया जिसने नवाचार और व्यापक भागीदारी को प्रोत्साहित किया। 2019 से शुरू किए गए सुधारों, जिनमें इस क्षेत्र को निजी खिलाड़ियों के लिए खोलना, इन- स्पेस को एकल-खिड़की नियामक निकाय के रूप में स्थापित करना और 2023 में अंतरिक्ष नीति जारी करना शामिल है। इन कदमों ने भारत को वैश्विक अंतरिक्ष परिदृश्य में अपनी भूमिका का विस्तार करने में मदद की है।

विषय वस्तु के "समावेशी" पहलू पर प्रकाश डालते हुए, उन्होंने कहा कि अंतरिक्ष क्षेत्र के खुलने से स्टार्ट-अप, छात्र, उद्योग और नागरिक उस क्षेत्र में आ गए हैं जो कभी एक बंद क्षेत्र था।

## केंद्रीय मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने आंध्र प्रदेश व राजस्थान के पीएसएस और एमआईएस के प्रस्तावों को दी स्वीकृति

**श्री शिवराज सिंह ने 2 राज्यों के पीएसएस व एमआईएस के प्रस्ताव मंजूर कर किसानों को दी राहत**

**9,700 करोड़ रु. से ज्यादा के प्रस्तावों से किसानों को मिलेगा सीधा लाभ- श्री शिवराज सिंह**

(जीएनएस)।

किसानों को न्यूनतम समर्थन मूल्य सुनिश्चित कराने और उन्हें बाजार जोखिम से सुरक्षा प्रदान करने के लिए, प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र सरकार की किसान हितैषी नीति के अंतर्गत केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण और ग्रामीण विकास मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने खरीफ 2025-26 सीजन के लिए आंध्रप्रदेश तथा राजस्थान से प्राप्त मूल्य समर्थन योजना (पीएसएस) एवं बाजार हस्तक्षेप योजना (एमआईएस) के प्रस्तावों को आज स्वीकृति प्रदान की है। इन स्वीकृत प्रस्तावों का उपज मूल्य 9,700 करोड़ रुपये से ज्यादा है।

ये निर्णय प्रधानमंत्री श्री मोदी जी के किसान-कल्याण संकल्प के अनुरूप किसानों को आय-सुरक्षा प्रदान करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। केंद्रीय मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान द्वारा इन दोनों राज्यों के मंत्रियों तथा वरिष्ठ अधिकारियों के साथ वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से हुई महत्वपूर्ण बैठक में दी राज्यवार स्वीकृतियों के अंतर्गत आंध्र प्रदेश के किसानों के हितों के लिए मूंगफली खरीद को स्वीकृति प्रदान की गई हैं, जिसके तहत स्वीकृत पात्र मात्रा 37,273 मीट्रिक टन (MT) हैं, जबकि अनुमानित उत्पादन 1,49,090 MT है। मंजूर प्रस्ताव का टरद मूल्य 270.71 करोड़ रु. हैं। इसी तरह, आंध्र प्रदेश के किसानों को भी

97,887 MT प्याज खरीद की स्वीकृति एमआईएस में देकर शिवराज सिंह ने राहत दी है। इसका मूल्य 24.47 करोड़ रु. है। बैठक में बताया गया कि राज्य ने रायतु सेवा केंद्रों पर छा आधार-बायोमेट्रिक सिस्टम लागू कर दिया है। स्वीकृति से किसानों को उपज बिक्री का मजबूत भरोसा मिलेगा।

श्री शिवराज सिंह ने राजस्थान के किसानों के लिए 4 फसलों— मूंग, उड़द, मूंगफली और सोयाबीन की रिकॉर्ड स्तर पर खरीद को मंजूरी दी। राजस्थान के लिए ये स्वीकृति देश में सबसे बड़ी खरीद पहलों में से है, जिसके तहत स्वीकृत पात्र मात्रा मूंग 3,05,750 MT, उड़द 1,68,000 MT (100%), मूंगफली 5,54,750 MT व सोयाबीन की 2,65,750 MT हैं, वहीं इनका कुल MSP मूल्य लगभग 9,436 करोड़ रु. है। बैठक में बताया गया कि राज्य ने POS आधारित आधार प्रमाणीकरण लागू करने की तैयारी पूरी कर ली है। ये निर्णय राज्य के लाखों किसानों को लाभ पहुंचाएगा।

## भारत सरकार ने 'युवा एआई फॉर ऑल' का शुभारंभ किया

यह एक निःशुल्क राष्ट्रीय पाठ्यक्रम है जो सभी को आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस को समझने में सहायता करेगा

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस को सभी के लिए सुलभ बनाने की दिशा में एक छोटा, सरल, व्यावहारिक और निःशुल्क पाठ्यक्रम

इस पहल का उद्देश्य 1 करोड़ (10 मिलियन) नागरिकों को मूलभूत आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस कौशल से सशक्त बनाना है

यह पाठ्यक्रम वैश्विक ज्ञान को भारत के संदर्भ के साथ जोड़ता है और नैतिक, दायित्वपूर्ण और समावेशी आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के उपयोग पर केंद्रित है

(जीएनएस)।

इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय (एमईआईटीवाई) ने भारत एआई मिशन के अंतर्गत, 'युवा एआई फॉर ऑल' का शुभारंभ किया है। यह अपनी तरह का पहला निःशुल्क पाठ्यक्रम है जो सभी भारतीयों, विशेषरूप से युवाओं को

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) की दुनिया से परिचित कराता है।

यह छोटा, 4.5 घंटे का स्व-गतिशील पाठ्यक्रम विद्यार्थियों, पेशेवरों और अन्य जिज्ञासु शिक्षार्थियों को एआई की मूल बातें समझाने और यह दिखाने के लिए डिजाइन किया गया है कि यह दुनिया को कैसे बदल रहा है। यह सरल और व्यावहारिक है तथा सीखने को रोचक और मनोरंजक बनाने के लिए वास्तविक जीवन के भारतीय उदाहरणों से भरा हुआ है।

यह पाठ्यक्रम प्रमुख शिक्षण मंचों - फ्यूचरस्किल्स प्राइम, आईगोट कर्मयोगी और अन्य लोकप्रिय एड-टेक यानी उन्नत प्रौद्योगिकी पोर्टल्स पर निःशुल्क उपलब्ध है। इस पाठ्यक्रम को पूरा करने वाले प्रत्येक शिक्षार्थी को भारत सरकार से एक आधिकारिक प्रमाण पत्र मिलेगा।

छह छोटे, आकर्षक मॉड्यूल के माध्यम से, शिक्षार्थीः

जानें कि एआई असल में क्या है और यह कैसे काम करता है

जानें कि एआई शिक्षा, रचनात्मकता और काम को कैसे बदल रहा है

समझें कि एआई उपकरणों का सुरक्षित और दायित्वपूर्ण रूप से कैसे इस्तेमाल करें

**केंद्रीय पर्यावरण मंत्री श्री भूपेंद्र यादव ने ब्राजील के बेलेम में संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन सम्मेलन में पक्षकारों के 30वें सत्र (सीओपी30) में भारत का राष्ट्रीय वक्तव्य दिया**

केंद्रीय पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्री, श्री भूपेंद्र यादव ने 17.11.2025 को ब्राजील के बेलेम में आयोजित संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन सम्मेलन में पक्षकारों के 30वें सत्र में भारत का राष्ट्रीय वक्तव्य दिया। श्री भूपेंद्र यादव ने सीओपी30 को कार्यान्वयन और वादों को पूरा करने वाले सीओपी के रूप में अपनाने का आह्वान किया। श्री भूपेंद्र यादव ने ब्राजील की सरकार और जनता के प्रति भारत की ओर से हमारे ग्रह की पारिस्थितिक संपदा के एक जीवंत प्रतीक 'अमेजन के हृदय' में सीओपी30 की मेजबानी के लिए आभार व्यक्त किया।

# सम्पादकीय

## समाप्ति की ओर नक्सलवाद

भारत के सबसे ज्यादा खूंखार वामपंथी उग्रावादियों में से एक माडवी हिडमा को वेंद्रीय सुरक्षा बल के जवानों ने गृहमंत्री अमित शाह द्वारा निर्धारित 30 नवम्बर की तिथि से 12 दिन पहले ही मंगलवार को निपटा कर यह सुनिति कर दिया कि अब गृहमंत्री द्वारा वामपंथी उग्रावाद को समाप्त करने की 31 मार्च 2026 की समय सीमा भी सच साबित होने जा रही है।

दरअसल हिडमा वामपंथी उग्रावाद का प्रामुख चेहरा था और छत्तीसगढ़, आंध्र प्रादेश एवं तेलंगाना में आम जनता के लिए भयंकर अत्याचार का प्रातिमूर्ति तो था ही सुरक्षा बलों के लिए भी सिरदर्द बन चुका था। हिडमा 26 बड़ी हिसक वारदातों में वांछित था और तीनों राज्यों में आतंक का पर्याय बन चुका था।

असल में आजादी के तुरन्त बाद भारत पर वामपंथ की प्रोत छाया भी पड़ गईं क्योंकि वुछ वामपंथी बुद्धिजीवियों ने सोवियत संघ से आर्थिक मदद लेकर भारत में भी लाल यानि रक्त संस्वृति की स्वीकार्यता को बढ़ाने के लिए ठेका ले लिया। इसका परिणाम यह हुआ कि वामपंथ का अतिवादी रूप का विकास बारूदी वामपंथी विचारकों ने कर दिया। खुद तो उन्होंने कभी बंदूक नहीं चलाई किन्तु देश के भोले-भाले युवकों एवं युवतियों को यह विश्वास जरूर दिया कि आजादी बंदूक की नली से ही निकलती है।

मतलब वामपंथ का भीषण विनाशक चेहरा नक्सलवाद के रूप में विकसित होना 60 के दशक में ही शुरू हो गया था। पामि बंगाल और त्रिपुरा में आतंकवाद के वामपंथी चेहरे को वुछ क्षेत्रों में समर्थन भी मिला किन्तु कम्युनिस्ट पाटा ऑफ इंडिया की सरकारें ही दोनों राज्यों में थीं तो उन्होंने बारूदी विचारकों को अपना प्रातिद्वंद्वी समझकर निपटाना शुरू कर दिया।

इन दोनों राज्यों में सुरक्षा बलों को वामपंथी उग्रावादियों को नियंत्रण करने में काफी मुश्किल का सामना करना पड़ा किन्तु कम्युनिस्ट पाटा के काडर कामरेडों ने ही नक्सलियों का सफाया करके पामि बंगाल और मिजोरम से नक्सलीवादी इलाकों में शांति स्थापित कर दी। लेकिन जैसे-जैसे कम्युनिस्ट पाटा की पकड़ राजनीति में शिथिल होती गईं, वामपंथी उग्रावादियों ने नक्सली हिसा की दुकान फिर दूसरे रूप में सजा ली। पहले जो नक्सली सिद्धांत का मुलम्मा चढ़ाने के लिए कार्लमार्क्स, लेनिन माओ, कानू सान्याल जैसे लोगों का नाम लेकर देश में वामपंथ का परचम बुलंद करने की बात करते थे, वे असफल होने के बाद फिर समाज में नक्सली ब्राण्ड लेकर उतरे किन्तु पहले ये नक्सली सर्वहारा यानि हैवनात के लिए बंदूक उठाने की बात करते थे। उनकी बातें कर्ण प्रिय लगती थीं क्योंकि बुर्जुआ यानि 'हैव' से छीनने की बात की जाती थी। सत्तर के दशक बीतते ही नक्सलियों का बारूदी खेल फिर सामने आ गया। लेकिन इस बार वुछ ऐसा नक्सलवाद आया कि बड़े-बड़े नक्सलियों ने अपना व्यवसाय चलाने के लिए इस बारूदी तरीके का सहारा लिया। जंगलों में जितने आर्थिक अपराध होते हैं, उनमें नक्सली कमांडर शामिल रहते हैं। ये नक्सली वन विभाग के सरकारी अधिकारियों से वसूली करते हैं और फिरौती का उन्हें जो धन आता है उससे वे अपने बड़े-बड़े कारोबार चलाते हैं। गरीब परिवार से आने वाले नक्सली युवकों और युवतियों को तो वामपंथ का चूरन खिलाकर हत्याएं करवाते हैं और खुद मजे से समानान्तर सरकार चलाते हैं। अपने प्राभाव वाले स्थानों पर नक्सल विरोधी आम जनता को यातनाएं देते हैं। वे अदालतें लगाते हैं और पैसले में आम जनता के साथ व्रूरता की जाती है। नक्सलियों की अदालत में ऐसे पैसले होते हैं कि आरोपी के शरीर से अंग विच्छेदन का आदेश मिलता है। सरकारी ठेकेदार की मजदूरी करने पर हाथ-पैर काटने की सजा मिलती है। पुलिस की मदद करने पर सजाए मौत और नक्सलियों के खिलाफ कोर्ट में गवाही देने पर आंखें निकालने की सजा मिलती है। पुलिस प्राशासन पीड़ित परिवारों की कोई मदद नहीं कर पाता। मानवाधिकारों के प्राति वज्रघात करने वाले नक्सली आधुनिक समाज के लिए कलंक हैं, इसलिए इनका अंत तो होना ही चाहिए। राज्य सरकारें और वेंद्र सरकार आपस में जिस तरह तालमेल बैठाकर नक्सलियों के सफाए को प्राथमिकता दे रहे हैं उससे तो यही लगता है कि नक्सलवाद मार्च 2026 के पहले ही दम तोड़ देगा।

# भारत पर्व-2025 में झलका स्वदेशी का गौरव : पटोला से लेकर पश्मीना तक, विभिन्न कलाओं ने बिखेरा 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' के हुनर का जादू

**एकता नगर में देश के कोने-कोने से आए 55 स्वदेशी स्टॉलों में दिखी भारतीय कला और कारीगरी की विविधतापूर्ण झांकी**

**स्थानीय हस्तकला, हैंडलूम, जैविक उत्पाद, फूड आर्ट और ग्रामीण उद्योगों के कार्यक्रमों से एकता नगर में साकार हुआ 'वोकल फॉर लोकल' का सूत्र**

**'भारत पर्व-2025' महिलाओं और युवा उद्यमियों के लिए बना स्वदेशी रचनात्मक शक्ति का 'प्लेटफॉर्म ऑफ प्राइड'**

गांधीनगर, 18 नवंबर : एकता नगर स्थित स्टैच्यू ऑफ यूनिटी परिसर में हाल ही में संपन्न हुए 'भारत पर्व-2025' ने इस भाव को बखूबी जीवंत किया कि स्वदेशी ही आत्मनिर्भर भारत का आधार है। लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल की जयंती को समर्पित इस भव्य पर्व में देश के कोने-कोने से आए हस्त शिल्प कलाकारों, कारीगरों और उद्यमियों ने अपने स्वदेशी उत्पादों का प्रदर्शन किया।

भारत पर्व का मुख्य आकर्षण यहां लगाए गए 55 स्वदेशी स्टॉल थे, जिन्होंने देश की विभिन्न संस्कृतियों और परंपराओं का जीवंत प्रदर्शन प्रस्तुत किया। हरेक स्टॉल ने भारतीय ग्रामीण जीवन, उत्कृष्ट कारीगरी और लोकशैली का प्रतिनिधित्व किया। पंजाब के फुलकारी दुपट्टे, राजस्थान की हस्तनिर्मित पॉटरी, तमिलनाडु की कांजीवरम साड़ी, नागालैंड के बांस से बने उत्पाद और गुजरात की पटोला-बांधणी के आकर्षक रंग ने आगंतुकों को अपने-अपने प्रदेश की कला-कारीगरी की सतरंगी झलक दिखलाई।

'वोकल फॉर लोकल' के सूत्र को आगे बढ़ाने वाले इस उत्सव में स्थानीय उत्पादों और पारंपरिक कारीगरों को एक वैश्विक मंच मिला। इस उत्सव के दौरान नर्मदा नदी के तट पर स्थित एकता नगर स्वदेशी की भावना से ओतप्रोत और जगमगाता हुआ नजर आया। स्टॉल पर मौजूद युवा उद्यमियों, महिला स्वयं सहायता समूहों और हस्त शिल्प कलाकारों ने अपने हाथों की कला के जरिए देश की समृद्ध विरासत को शानदार तरीके से उजागर किया।

स्वदेशी स्टॉलों में विशेष रूप से ऑर्गेनिक (जैविक) खाद्य पदार्थ, आयुर्वेदिक उत्पाद, हैंडलूम फैब्रिक्स, रीसाइकिल मटेरीयल से बनी सजावटी कलाकृतियां तथा प्राकृतिक रंगों से बने कपड़े आगंतुकों के लिए विशेष आकर्षण का केंद्र बने। खास बात यह है कि यहां आगंतुकों ने केवल खरीदारी ही नहीं की, बल्कि उन्होंने प्रत्येक स्टॉल के पीछे छिपी कहानी, कारीगर की मेहनत और हुनर के साथ-साथ पारंपरिक ज्ञान का अनुभव भी किया।

'भारत पर्व-2025' केवल एक प्रदर्शनी ही नहीं, बल्कि यह आत्मनिर्भरता की दिशा में एक प्रेरणादायी अभियान भी सिद्ध हुआ, जहां 'मेड इन इंडिया' का गौरव पर्यटकों के दिल तक पहुंचा। लाइव म्यूजिक, लोकनृत्य, हस्तकला कार्यशाला और लजीज क्षेत्रीय भोजन के साथ यह उत्सव एक जीवंत भारतीय मेला बन गया।

स्टैच्यू ऑफ यूनिटी की तलहटी में मनाया गया यह पर्व केवल रंग-बिरंगी रोशनी से ही नहीं, अपितु भारत की आत्मा 'स्वदेशी' के उजियारे से भी जगमगा उठा, जिसने प्रत्येक भारतीय को स्वदेशी उत्पादों को अपनाने का संदेश दिया।

# केले का छिलका बढ़ती उम्र पर लगा देगा लगाम : शहनाज हुसैन

हम अक्सर केला खाने के बाद उसका छिलका झट से डस्टबिन में फेंक देते हैं, अगर आप भी ऐसा ही करते हैं तो अब कभी ऐसा मत करिएगा क्योंकि

केले का छिलका आपकी खूबसूरती में चार चांद लगा सकता है

केले का छिलका एंटीऑक्सीडेंट्स , विटामिन बी 6 विटामिन सी पोटैशियम और मिनरल्स से भरपूर होता है, जोकि आपकी त्वचा और बालों के लिए बेहद फायदेमंद हो सकता है

विटामिन त्वचा को पोषण देते हैं और चमक बढ़ाते हैं। पोटैशियम त्वचा को हाइड्रेट करने में मदद करता है जबकि एंटीऑक्सीडेंट्स त्वचा को धूप और प्रदूषण से होने वाले नुकसान से बचाते हैं।

केले का फेस मास्क बनाने के लिए केले के छिलकों को छोटे छोटे टुकड़ों में काट कर इन्हें मिक्सी में पीसकर मुलायम पेस्ट बना लें /

इस पेस्ट में आधा चम्मच चावल का आटा और आधा चम्मच चीनी मिलाएं। इन तीन चीजों को अच्छी तरह मिक्स करें। इस तरह आपका नेचुरल फेस मास्क तैयार हो जाएगा/

इस फेस मास्क को अप्लाई करने से पहले अपने चेहरे को साफ पानी से जरूर धो लें ताकि त्वचा पर जमी मैल और गन्दगी हट जाये अन्यथा इसके पॉजिटिव रिजल्ट नहीं आएंगे / इसके बाद इस फेस मास्क को त्वचा पर समान रूप से लगाएं और प्रकृतिक तौर पर सूखने दें /

जब मास्क सूख जाए तो ठंडे पानी से चेहरा धो लें। इस मास्क को रोजाना एक बार लगाने से आपकी त्वचा मुलायम, साफ और चमकदार बनेगी। आप चाहें तो यह पेस्ट ज्यादा मात्रा में बना कर एयर टाइट कंटेनर में भी रख सकते हैं और जरूरत के अनुसार इसका उपयोग कर सकते हैं /

अगर आपके चेहरे पर समय से पहले फाइन लाइन्स आनी शुरू हो गई हैं या दाग धब्बों से परेशान हैं तो भी केले का छिलका मददगार हो सकता है / इसके लिए पके हुए केले का छिलका लेकर अन्दर वाले हिस्से से चेहरे पर धीरे.धीरे मसाज करें/ खासकर दाग.धब्बों या पिंपल्स वाली जगह पर/ इसे आधा घण्टा तक छोड़ दें और फिर गुनगुने पानी से चेहरा धो लें।

झुर्रियों से छुटकारा पाने के लिए केले के छिलके के अंदर वाले हिस्से को चेहरे पर कुछ मिनट के लिए रगड़े फिर गुलाब जल लगाएं। इसके बाद 2 5 मिनट के बाद चेहरा धो लें। बेहतर परिणामों के लिए इसका नियमित इस्तेमाल करें /

त्वचा को टोन करने के लिए केले के छिलके को मैश करके इसमें दही मिलाकर स्मूद पेस्ट बना लें / इस पेस्ट को चेहरे पर लगाने के बाद आधा घण्टा तक छोड़ने के बाद ताजे ठन्डे पानी से धो डालें / इसके नियमित उपयोग से कील मुहांसों को चेक करने में भी मदद मिलेगी /

आंखों के नीचे के काले घेरे दूर करने में भी केले का छिलका असरदार साबित होता है । इसके लिए आपको सबसे पहले केले के अंदर का सारा रेशा निकालना होगा। इसमें एक चम्मच एलोवेरा जैल मिलाकर आंखों के आस पास 15 -20 मिनट लगाएं और बाद में ताजे पानी से धो डालें / इसके रोजाना उपयोग से आँखों के नीचे की रंगत में असर दिखाई देगा /

केले का छिलका आपकी त्वचा की रंग निखारने में काफी मददगार साबित होता है । इसके लिए केले के छिलके का पेस्ट बना कर फिर उसमें बेकिंग सोडा और थोड़ा सा पानी मिलाएं। इस पेस्ट को चेहरे पर 10-15 मिनट स्क्रब की तरह रगड़े ऐसा करने से आपकी त्वचा का रंग निखरने लगेगा और आप आकर्षक दिखेंगी /

त्वचा पर डेड स्किन जमा होने पर केले के छिलके का इस्तेमाल स्क्रब के रूप में भी किया जा सकता है।

एक पके केले के छिलके को मैश कर लें। इसमें 2 चम्मच ओट्स मिलाकर स्मूद पेस्ट बना लें / इस पेस्ट को आधा घण्टा तक त्वचा पर लगा रहने के बाद चेहरे को ताजे साफ पानी से धो डालें / यह आपकी त्वचा के डेड स्किन सैल्स को हटाने में मददगार साबित होगा /

सामान्य तौर पर केले का छिलका हर प्रकार की त्वचा के लिए सुरक्षित माना जाता है लेकिन सेंसिटिव स्किन वाले लोगों को पहले पैच टेस्ट करना चाहिए। अगर जलन या खुजली हो तो इस्तेमाल से परहेज करें।

लेखिका अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त सौन्दर्य विशेष्ज्ञ है और हर्बल क्वीन के रूप में लोकप्रिय है /

# वीएमएमसी-सफदरजंग अस्पताल और सीसीआरएएस-सीएआरआई ने इंटीग्रेटेड मेनोपॉज केयर रिसर्च को बढ़ावा देने के लिए समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए

(जीएनएस)।

महिलाओं के लिए इंटीग्रेटेड हेल्थकेयर को मजबूत करने की दिशा में एक अहम कदम उठाते हुए, वर्धमान महावीर मेडिकल कॉलेज (वीएमएमसी) और सफदरजंग हॉस्पिटल ने आज आयुष मंत्रालय के सेंट्रल काउंसिल फॉर रिसर्च इन आयुर्वेदिक साइंसेज (सीसीआरएएस) के तहत सेंट्रल आयुर्वेद रिसर्च इंस्टीट्यूट (सीएआरआई) के साथ एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए। इस सहयोग का उद्देश्य मेनोपॉज केयर को बेहतर बनाने पर केंद्रित वैज्ञानिक, साक्ष्य-आधारित आयुर्वेद अनुसंधान को आगे बढ़ाना है।

मेनोपॉज से गुजर रही महिलाओं को आम तौर पर हॉट फ्लश, अनिद्रा, थकान, वजाइनल ड्राइनेस, मूड में उतार-चढ़ाव, एंग्जायटी और याददाश्त से संबंधी समस्याओं जैसे लक्षण अनुभव किए जाते हैं। सुरक्षित और सहायक उपचार विकल्पों में बढ़ती रुचि ने कई महिलाओं को आयुर्वेद सहित समग्र दृष्टिकोण तलाशने के लिए प्रेरित किया है। यह समझौता ज्ञापन पारंपरिक ज्ञान को आधुनिक चिकित्सा पद्धति के साथ मिलाने वाले, मान्य एकीकृत असरदार रहें।

प्रोटोकॉल को विकसित करने की दिशा में एक बड़ा कदम है।

लोगों को संबोधित करते हुए, वीएमएमसी और सफदरजंग हॉस्पिटल के डायरेक्टर डॉ. संदीप बंसल ने कहा कि अगर एलोपैथिक इलाज के साथ-साथ आयुर्वेदिक इलाज को समझदारी से इस्तेमाल किया जाए, तो मेनोपॉज वाली महिलाओं को बहुत फायदा हो सकता है। उन्होंने कहा कि कुछ आयुर्वेदिक दवाएँ, जिनमें मेटल होते हैं, उन्हें एक्सपर्ट्स की कड़ी निगरानी में लेना चाहिए ताकि वे सुरक्षित और

सीएआरआई के संस्थान प्रभारी डॉ. हेमंत पानीग्रही ने इस बात पर प्रकाश डाला कि आयुष मंत्रालय की शीर्ष अनुसंधान संस्था के रूप में सीसीआरएएस दशकों से आयुर्वेद में वैज्ञानिक अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्ध रहा है। उन्होंने बताया कि सफदरजंग अस्पताल में आयुर्वेद इकाई वर्ष 1996 से कार्यरत है और रोगी देखभाल तथा सहयोगात्मक अनुसंधान में महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। उन्होंने आगे कहा, "साक्ष्य-आधारित आयुर्वेद को वैश्विक स्वीकृति मिल रही है, और यह साझेदारी एकीकृत अनुसंधान विधियों को और मजबूत करेगी तथा जन देखभाल को आगे बढ़ाएगी।"

यह सहयोग वैज्ञानिक रूप से मान्य, सुरक्षित और प्रभावी आयुर्वेदिक उपचारों को डिजाइन करने पर केंद्रित है, जो मॉडर्न मेनोपॉज केयर के पूरक होंगे। इस पहल से रोगियों के परिणामों में सुधार होने, अनुसंधान क्षमता का विस्तार होने और समग्र स्वास्थ्य समाधानों तक व्यापक पहुँच मिलने की उम्मीद है।

इस कार्यक्रम के दौरान, प्रिंसिपल इन्वेस्टिगेटर डॉ. शिवशंकर राजपूत और प्रोफेसर उपमा सक्सेना ने डॉ. चारु बाम्बा (चिकित्सा अधीक्षक), डॉ. श्वेता माता और डॉ. आशिमा जैन की उपस्थिति में परियोजना का विवरण प्रस्तुत किया।

यह समझौता ज्ञापन वीएमएमसी-सफदरजंग अस्पताल और आयुष मंत्रालय द्वारा साझा रूप से की गई प्रतिबद्धता को दर्शाता है, जिसका उद्देश्य सहयोगात्मक, रोगी-केंद्रित स्वास्थ्य सेवा को आगे बढ़ाना और महिलाओं के स्वास्थ्य के लिए एकीकृत अनुसंधान में नए प्रतिमान स्थापित करना है।

# भारतीय चिकित्सा एवं होम्योपैथी के फामाकीपिया आयोग (पीसीआईएमएंडएच) ने 'एएसयूएंडएच के फामाकीपियाल मापदंडों' पर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया

(जीएनएस)।

भारतीय औषधि एवं होम्योपैथी फामाकीपिया आयोग (पीसीआईएमएंडएच) ने आज आयुष मंत्रालय के राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड (एनएमपीबी) द्वारा वित्त पोषित क्षेत्रीय कच्चे औषधि भंडार (आरआरडीआर) - गंगा मैदानी क्षेत्र परियोजना के अंतर्गत "एएसयूएंडएच के फामाकीपियाल मापदंडों" पर एक दिवसीय जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया।

पीसीआईएमएंडएच के निदेशक डॉ. रमन मोहन सिंह ने अपने स्वागत भाषण में प्रतिभागियों को आयुर्वेद, सिद्ध, यूनानी और होम्योपैथी (एएसयूएंडएच) औषधियों के मानकीकरण और गुणवत्ता नियंत्रण के क्षेत्र में आयोग द्वारा की गई विभिन्न गतिविधियों और हाल की कोशिशों के बारे में जानकारी दी।

उपस्थित जनसमूह को संबोधित करते हुए, एनएमपीबी के मुख्य कार्यकारी अधिकारी, प्रो. (डॉ.) महेश कुमार दाधीच ने एएसयू एंड एच प्रणालियों की सुरक्षा और प्रभावकारिता सुनिश्चित करने में प्राकृतिक औषधियों की गुणवत्ता की महत्वपूर्ण भूमिका पर और बताया कि एनएमपीबी, राष्ट्रीय भौतिक प्रयोगशाला के सहयोग से, एएसयू एंड एच औषधियों के लिए भारतीय निर्देशक द्रव्य विकसित कर रहा है। उन्होंने क्यूआर-कोड सक्षम डेटाबेस के साथ विषयगत औषधीय

प्रकाश डाला। उन्होंने आरआरडीआर विकसित करने में पीसीआईएम एंड एच द्वारा की गई प्रगति की सराहना की पादप उद्यान स्थापित करने के लिए पीसीआईएम एंड एच की भी सराहना की।

डीआरडीआर के पूर्व एसोसिएट निदेशक डॉ. राजेंद्र सिंह ने एएसयूएंडएच दवाओं की बढ़ती वैश्विक स्वीकृति को रेखांकित किया और फामाकीपियल और फार्मूलरी मानकों की स्थापना में पीसीआईएमएंडएच की महत्वपूर्ण भूमिका को स्वीकार किया।

पीसीआईएमएंडएच की प्रधान वैज्ञानिक अधिकारी (फामाकीग्नॉसी) डॉ. ए. जयंती ने गंगा मैदानी आरआरडीआर परियोजना के अंतर्गत गतिविधियों का अवलोकन प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि पीसीआईएमएंडएच वर्तमान में अपने भंडार में 523 प्रामाणिक कच्ची औषधियों के नमूने और एएसयूएंडएच औषधियों की 218 प्रजातियों के लगभग 1,000 हर्बेरियम नमूने संरक्षित कर रहा है।

कार्यक्रम में लगभग 60 प्रतिभागियों ने भाग लिया, जिनमें दिल्ली के जामिया हमदर्द विश्वविद्यालय, गाजियाबाद के राज कुमार गोयल प्रौद्योगिकी संस्थान, जीएस आयुर्वेद कॉलेज, संस्कार कॉलेज ऑफ फामेर्सी, नई दिल्ली के अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान (एआईआईए), ग्रेटर नोएडा से बैक्सन होम्योपैथिक मेडिकल कॉलेज, आईएमएस गाजियाबाद आदि संस्थानों ने प्रतिनिधित्व किया ।

तकनीकी सत्रों में आरआरडीआर परियोजना के सलाहकार डॉ. मुकेश कुमार द्वारा 'औषधीय पौधों की वर्गीकरण संबंधी पहचान'; पीसीआईएम एंड एच के पीएसओ डॉ. ए. जयंती द्वारा 'फामाकीग्नॉस्टिक मापदंडों द्वारा प्राकृतिक दवाओं की पहचान'; पीसीआईएम एंड एच के पीएसओ डॉ. एससी वर्मा द्वारा 'पारंपरिक दवाओं का गुणवत्ता नियंत्रण और गुणवत्ता मूल्यांकन'; और माइक्रोबायोलॉजी के एसओ डॉ. एम. रमेश द्वारा 'एएसयू एंड एच दवाओं का माइक्रोबियल विश्लेषण' पर विशेषज्ञ व्याख्यान शामिल थे।

तकनीकी सत्रों के बाद, प्रतिभागियों को फामाकीग्नॉसी, रसायन विज्ञान और सूक्ष्म जीव विज्ञान प्रयोगशालाओं में व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया गया और एएसयूएंडएच औषधियों के मानकीकरण और गुणवत्ता नियंत्रण में प्रयुक्त प्रमुख उपकरणों का प्रदर्शन भी दिखाया गया। हर्बल गार्डन, क्षेत्रीय कच्ची औषधि भंडार और बीज बैंक का भी अवलोकन कराया गया।

# कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय की किसान भाई-बहनों को एक और बड़ी सौगात

**जंगली जानवरों द्वारा फसल नुकसान को 'स्थानीयकृत जोखिम' के रूप में मान्यता; धान जलभराव को स्थानीयकृत आपदा श्रेणी में पुनः शामिल किया गया**

**तटीय, हिमालयी और उत्तर-पूर्वी राज्यों के किसानों को मिलेगा लाभ**

**किसान सुरक्षा को मजबूत करने हेतु ढटञ्ह के तहत नई प्रक्रियाओं की घोषणा - ढटञ्ह को अधिक समावेशी और सुदृढ़ बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम**

**खरीफ 2026 से लागू होंगी नई प्रक्रियाएँ**

(जीएनएस)।

कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय ने प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना (PMFBY) के तहत किसान भाई-बहनों को बड़ी सौगात दी है। मंत्रालय ने जंगली जानवरों द्वारा फसलों के नुकसान और धान जलभराव को कवर करने के लिए नई प्रक्रियाओं को औपचारिक रूप से मान्यता दे दी है।

संशोधित प्रावधानों के अनुसार, जंगली जानवरों द्वारा फसल नुकसान को स्थानीयकृत जोखिम श्रेणी के पाँचवें 'ऐड-ऑन कवर' के रूप में मान्यता दी गई है। राज्य सरकारें जंगली जानवरों की सूची अधिसूचित करेंगी तथा ऐतिहासिक आंकड़ों के आधार पर अत्यधिक प्रभावित जिलों/बीमा इकाइयों की पहचान करेंगी। किसान को फसल नुकसान की सूचना 72 घंटे के भीतर फसल बीमा ऐप पर जियो-टैग्ड फोटो के साथ दर्ज करनी होगी।

यह निर्णय विभिन्न राज्यों की लंबे समय से चली आ रही मांगों के अनुरूप है और किसानों को अचानक, स्थानीयकृत और गंभीर फसल क्षति से सुरक्षा प्रदान करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। ये प्रक्रियाएँ ढटञ्ह परिचालन दिशानिदेशों के अनुसार वैज्ञानिक, पारदर्शी और व्यवहारिक बनाई गई हैं, और खरीफ 2026 से पूरे देश में लागू की जाएँगी।

देशभर में किसान लंबे समय से हाथी, जंगली सूअर, नीलगाय, हिरण और बंदरों जैसे जंगली जानवरों के हमलों के कारण बढ़ते फसल नुकसान का सामना कर रहे हैं। यह समस्या मुख्यतः वन क्षेत्रों, वन गलियारों और पहाड़ी इलाकों के निकट बसे किसानों में अधिक देखी जाती है। अब तक ऐसे नुकसान फसल बीमा योजना के दायरे में नहीं आते थे, जिसके कारण किसानों को भारी आर्थिक हानि उठानी पड़ती थी। दूसरी ओर, तटीय एवं बाढ़ संभावित क्षेत्रों में धान की खेती करने वाले किसानों को वर्षा और नदी-नालों के उफान से होने वाले जलभराव के कारण समान रूप से भारी नुकसान उठाना पड़ता रहा है। वर्ष 2018 में इस जोखिम को स्थानीयकृत आपदा श्रेणी से हटाए जाने से किसानों के लिए एक बड़ा संरक्षण अंतर उत्पन्न हो गया था।

इन उभरती चुनौतियों को देखते हुए कृषि एवं किसान कल्याण विभाग ने एक विशेषज्ञ समिति गठित की। समिति की रिपोर्ट को माननीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान द्वारा स्वीकृति प्रदान कर दी गई है। इस महत्वपूर्ण निर्णय के साथ अब स्थानीय स्तर पर फसल नुकसान झेलने वाले किसानों को ढटञ्ह के तहत समयबद्ध और तकनीक-आधारित दावा निपटान का लाभ मिलेगा।

इस प्रावधान का सबसे अधिक लाभ ओडिशा, छत्तीसगढ़, झारखंड, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु, उत्तराखंड तथा हिमालयी और उत्तर-पूर्वी राज्यों जैसे असम, मेघालय, मणिपुर, मिजोरम, त्रिपुरा, सिक्किम और हिमाचल प्रदेश के किसानों को होगा।

RNI No.: UPHIN/25/A1697 Published & Owned by AJAYKUMAR RAMANLAL PRAJAPATI and Printed By SUSHILA SHUKLA at Krishna Printiers, 271/31 Chakmaki Dugawa, Rajendranagar, Lucknow-226018, Uttar Pradesh.
and Published from 538 GHA/85 Pataurganj, Near Janki Prasad Dharmshala, Sitapur Road, Niralanagar, Lucknow-226020, Uttar Pradesh. Editor : ASHWANI KUMAR

# रेलवे ने थोक सीमेंट के माल ढुलाई शुल्क में कटौती की, निर्धन और मध्यम वर्गीय परिवारों के लिए किफायती आवास में सहायता मिलेगी

**नई नीति के तहत निर्बाध डोर-टू-डोर लॉजिस्टिक्स समाधान के लिए अनुकूलित कंटेनर और नए बल्क सीमेंट टर्मिनल**

(जीएनएस)।

केंद्रीय रेल, सूचना एवं प्रसारण, तथा इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव ने आज कंटेनरों में थोक सीमेंट की दरों को विवेकपूर्ण बनाने और थोक सीमेंट टर्मिनलों के लिए नीति का अनावरण किया। यह नीति सीमेंट परिवहन के लिए रेलवे सुधारों का एक हिस्सा है।

श्री अश्विनी वैष्णव ने नई दिल्ली स्थित रेल भवन में नीति का अनावरण करते हुए इस क्षण को एक क्रांतिकारी बदलाव बताया। उन्होंने कहा कि इन सुधारों से मध्यम और निर्धन परिवारों के लिए अपने सपनों का घर बनाते समय सीमेंट की लागत कम हो जाएगी। नई नीति के अनुसार, दूरी और भार के स्लैब हटा दिए गए हैं। श्री वैष्णव ने बताया कि नई दर को फ्लैट सकल टन किलोमीटर पर 0.90 रुपये प्रति टन प्रति किलोमीटर कर दिया गया है।

श्री अश्विनी वैष्णव ने कहा कि टैंक कंटेनर थोक सीमेंट परिवहन के लिए एक संपूर्ण प्रदूषण मुक्त लॉजिस्टिक्स समाधान साबित होंगे। उन्होंने कहा कि भारत अब विश्व का दूसरा सबसे बड़ा मालवाहक है, जिसने अमेरिका को पीछे छोड़ दिया है। रेल नेटवर्क का विस्तार 4 किलोमीटर प्रतिदिन (2004-14 के दौरान) से बढ़कर 12-14 किलोमीटर प्रतिदिन हो गया है, जिससे यह तीन गुना से भी अधिक बढ़ गया है। ब्रॉड-गेज रेल

नेटवर्क अब लगभग 100 प्रतिशत विद्युतीकृत है। श्री वैष्णव ने कहा कि वर्तमान में देश भर में 1,300 से अधिक अमृत स्टेशन विकसित किए जा रहे हैं।

टैंक कंटेनरों में थोक सीमेंट के लिए माल ढुलाई का विवेकीकरण

नई दर संरचना को सरल और युक्तिसंगत बनाया गया है, जिसमें वास्तविक टन भार पर आधारित शुल्क लागू किए गए हैं, जिसकी गणना ट्रेन के सकल टन किलोमीटर (जीटीकेएम) के रूप में की जाती है। व्यापार सुगमता बढ़ाने के लिए, पिछली दूरी और भार स्लैब को हटा दिया गया है। संशोधित प्रणाली के तहत, वास्तविक दूरी तय करने पर 0.90 रुपये प्रति टन प्रति किलोमीटर की एक समान दर से माल ढुलाई ली जाती है।

यह नीति थोक सीमेंट के लिए कुशल मल्टी मॉडल, समग्र लॉजिस्टिक्स को बढ़ावा देने के लिए टैंक कंटेनरों के उपयोग को बढ़ावा देती है। टैंक कंटेनर थोक सीमेंट परिवहन के लिए एक प्रभावी संपूर्ण लॉजिस्टिक्स समाधान है और "मेक इन इंडिया" का एक गौरवशाली उत्पाद है। इसे 20 फीट . 8 फीट . 8.5 फीट के मानक आयामों के साथ डिजाइन किया गया है, जो 26 टन की पेलोड क्षमता और 31 टन का सकल भार प्रदान करता है। प्रत्येक कंटेनर केवल 25-30 मिनट के लोडिंग और अनलोडिंग समय के साथ कुशल संचालन की अनुमति देता है। इसका डिजाइन इसे निर्बाध मल्टी मॉडल परिवहन— ट्रेन से ट्रेलर और वापस ट्रेन तक आसानी से पहुंचा जा सकता है—के लिए आदर्श बनाता है जिससे उत्पादन बिंदु से उपभोग बिंदु तक सुचारू वितरण संभव होता है।

थोक सीमेंट टर्मिनलों के लिए नीति

विनिर्माण संयंत्रों से उपभोग केंद्रों के निकट टर्मिनलों तक विशेष वैगनों का उपयोग करने के जरिए थोक सीमेंट का परिवहन लागत-प्रभावी और पर्यावरण-अनुकूल दोनों है। कुशल लॉजिस्टिक्स की ओर इस बदलाव को और बढ़ावा देने के लिए, भारतीय रेलवे "बल्क सीमेंट टर्मिनल" नीति के तहत देश भर में बल्क सीमेंट टर्मिनलों के विकास को सुगम बनाएगा, जिससे सीमेंट का संचालन, भंडारण और वितरण अधिक सुचारू रूप से हो सकेगा।

निर्बाध लॉजिस्टिक्स सुनिश्चित करने के लिए, बल्क सीमेंट टर्मिनलों का निर्माण, संचालन और रखरखाव रेलवे नेटवर्क से सीधे संपर्क के साथ किया जाएगा। ये टर्मिनल हॉपर, साइलो, बैगिंग प्लांट और अन्य संबंधित अवसंरचना जैसी आवश्यक सुविधाओं से सुसज्जित होंगे जिससे कि बल्क सीमेंट के कुशल संचालन, भंडारण और वितरण में सहायता मिल सके।

यह नीति कई प्रमुख लाभ प्रदान करती है, जिनमें सीमेंट परिवहन लागत में उल्लेखनीय कमी और सड़क परिवहन की तुलना में कार्बन उत्सर्जन में महत्वपूर्ण गिरावट शामिल है। इससे पर्यावरणगत स्थिरता को बढ़ावा मिलता है और सड़कों पर भीड़भाड़ कम होती है। यह एक ही खेप में बड़ी मात्रा में सीमेंट की ढुलाई को संभव बनाती है और पैकेजिंग की आवश्यकताओं को कम करती है, साथ ही रिसाव से होने वाले सामग्री के नुकसान को भी कम करती है। इसके अतिरिक्त, यह नीति मशीनीकृत लोडिंग और अनलोडिंग के माध्यम से तेज टर्नअराउंड समय सुनिश्चित करती है, जिससे सीमेंट लॉजिस्टिक्स में समग्र दक्षता बढ़ती है।

# काव्यात्मक अभिव्यक्ति के भावपूर्ण स्वरों की गूंज से यादगार बन गई साहित्यिक शाम

राष्ट्रीय कवि संगम द्वारा मुंबई प्रेस क्लब में आयोजित बहुभाषी कवि सम्मेलन में शामिल विभिन्न अतिथि एवं रचनाकार तथा "स्याही का सिपाही" पुस्तक का लोकार्पण करते हुए विभिन्न अतिथिगण।

**बहुभाषी कवि सम्मेलन और पुस्तक लोकार्पण का सफल आयोजन**

मुंबई, 18 नवम्बर। राष्ट्रीय कवि संगम, हिंदी साहित्य भारती "महिला प्रकोष्ठ" और साहित्यम संस्थाओं के संयुक्त तत्वावधान में सोमवार, 17 नवम्बर, 2025 की शाम मुंबई के आजाद मैदान स्थित मुंबई प्रेस क्लब के सभागार में "अभिव्यक्ति के स्वर" शीर्षक से राष्ट्रीय बहुभाषी कवि सम्मेलन का सफल आयोजन सम्पन्न हुआ। इस कवि सम्मेलन में विभिन्न विधाओं की भावपूर्ण काव्यात्मक अभिव्यक्ति की सुमधुर गूंज से यह साहित्यिक शाम यादगार बन गई।

इस गरिमापूर्ण कवि सम्मेलन में वरिष्ठ गीतकार देवमणि पांडेय, संतोष कुमार झा, गजानन महतपुरकर, डॉ. कृपाशंकर मिश्र, श्रीमती रागिनी शाह, अरुण शेखर, हेमंत शर्मा, अंजनी कुमार द्विवेदी, ओमप्रकाश तिवारी, किरण तिवारी, अनिल गौड़, डॉ. रोशनी किरण, अनुपमा कड़वाड़, ताज मोहम्मद ताज, आशु शर्मा, जागृति सिन्हा, लक्ष्मी यादव, ओजस्विनी, रीता कुशवाहा, सीमा त्रिवेदी, अर्चना झा, राजू मिश्रा, अश्विनी उम्मीद लखनवी, पल्लवी रानी, अनुज वर्मा, अर्चना वर्मा सिंह, कल्पना म्हापुसकर, अक्षिता गोयल और लतिका शिंदे सहित लगभग 30 रचनाकारों ने हिंदी, मराठी, अवधी, बंगाली और मैथिली भाषाओं में अपनी भावपूर्ण एवं रोचक काव्य रचनाओं से उपस्थित श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। दीप प्रज्ज्वलन एवं माँ सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण के साथ शुरू हुए इस समारोह के प्रारम्भ में राष्ट्रीय कवि संगम, मुंबई की अध्यक्षा और इस समारोह की मुख्य संयोजिका श्रीमती रीमा राय सिंह ने सभी अतिथियों एवं रचनाकारों का स्मृति चिन्ह प्रदान कर स्वागत किया। इस अवसर पर मंच पर उपस्थित सभी गणमान्य अतिथियों ने कोंकण रेलवे के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री संतोष कुमार झा के चौथे काव्य संग्रह "स्याही का सिपाही" का लोकार्पण भी किया। समारोह की अध्यक्षता वरिष्ठ सिने गीतकार श्री देवमणि पांडेय ने की और इसका सुरुचिपूर्ण मंच संचालन वरिष्ठ कवयित्री डॉ. वर्षा महेश ने किया। आकाशवाणी मुंबई के वरिष्ठ उद्घोषक आनंद प्रकाश सिंह, वरिष्ठ कवयित्री श्रीमती कमलेश पाठक, हिन्दी साहित्य भारती महिला प्रकोष्ठ, मुंबई की अध्यक्षा रागिनी वीरेंद्र शाह, वरिष्ठ साहित्यकार नवीन चतुर्वेदी, कोंकण रेलवे के राजभाषा अधिकारी सदानंद चितले और प्रसिद्ध समाजसेवी महेंद्र सुराणा भी मंच पर विराजमान थे, जिन्होंने अपने विचारों से सभी को लाभान्वित किया। मुख्य अतिथि के रूप में कोंकण रेलवे के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक संतोष कुमार झा ने अपने सम्बोधन में सभी रचनाकारों की सराहना की और समाज में साहित्य के शाश्वत महत्व पर प्रकाश डाला। समारोह के अंत में नवीन चतुर्वेदी और श्रीमती रीमा राय सिंह ने आतिथ्य धर्म का निर्वहन करते हुए सभी अतिथियों एवं रचनाकारों का आभार व्यक्त किया।

# सी-डॉट, अमरावती क्वांटम वैली पहल में उत्कृष्टता केंद्र स्थापित करेगा

(जीएनएस)।

टेलीमैटिक्स विकास केंद्र-सी-डॉट ने आंध्र प्रदेश में क्वांटम अनुसंधान और नवाचार के वैश्विक केंद्र स्थापित करने के अमरावती क्वांटम वैली (एक्यूवी) पहल में शामिल होने के लिए आंध्र प्रदेश सरकार के साथ एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए हैं। सी-डॉट, भारत सरकार के दूरसंचार विभाग का प्रमुख दूरसंचार अनुसंधान एवं विकास केंद्र है। यह देश की रणनीतिक और सामाजिक-आर्थिक आवश्यकताएं पूरी करने के लिए स्वदेशी दूरसंचार समाधान और उपकरण के डिजाइन, विकास और अत्याधुनिक संचार तकनीक विकसित करने में लगा है। सी-डॉट क्वांटम सिक्योरिटी साल्यूशंस विकसित करने में अग्रणी भूमिका निभा रहा है जिसे सरकारी और निजी दोनों क्षेत्रों के प्रमुख शैक्षणिक संस्थानों, सरकार के अनुसंधान एवं विकास प्रयोगशालाओं, वास्तविक नेटवर्क के लाइव ट्रैफिक सहित कई स्थानों पर व्यापक तौर पर स्थापित किया गया है।

देश में क्वांटम भविष्य को आकार देने में आंध्र प्रदेश सरकार ने अमरावती क्वांटम वैली (एक्यूवी) स्थापना की पहल की है। राज्य के अमरावती में स्थित इस परियोजना में राज्य-स्तरीय भागीदारी, अवसरंचना विकास और प्रशिक्षण कार्यक्रम शामिल हैं। अमरावती क्वांटम वैली का उद्देश्य हार्डवेयर बनाना, सॉफ्टवेयर विकसित करना, प्रतिभा संवर्धन तथा अनुसंधान उत्कृष्टता को संयोजित करते हुए एकीकृत क्वांटम पारिस्थितिकी तंत्र निर्मित करना है।

आंध्र प्रदेश सरकार की साझेदारी से सी-डॉट आंध्र प्रदेश के अमरावती क्वांटम वैली में क्वांटम कम्युनिकेशनएवं सिक्युरिटी सॉल्युशंस के साथ ही गोपनीयता संवर्धन प्रौद्योगिकियों (पीईटी) जैसे संबद्ध क्षेत्रों में एक उत्कृष्टता केंद्र (सेंटर ऑफ एक्सलेंस) भी स्थापित करेगा। एक्यूवी स्थित इस केंद्र में सी-डॉट क्वांटम संचार समाधान विकसित करेगा।

क्वांटम कम्युनिकेशन में सी-डॉट की विशेषज्ञता भारत में इस क्षेत्र की उभरती कंपनियों को आवश्यक संसाधन और कौशल विकास में मदद करेगी। यह राष्ट्रीय क्वांटम मिशन के सिक्योरिटी साल्यूशंस से जुड़े क्षेत्रों में अनुसंधान और परीक्षण में मदद करेगा, साथ ही इलेक्ट्रॉनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय के डिजिटल निजी डेटा संरक्षण-डीपीडीपी ढांचे का अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए प्राइवेसी-एनहांसिंग टेक्नोलॉजीज विकसित करने में भी सहयोग देगा। सी-डॉट क्वांटम कम्युनिकेशन सिस्टम प्रणालियों के लिए किफायती उप-घटक विकसित पर भी ध्यान केंद्रित करेगा और क्वांटम सिक्योरिटी के लिए एकीकृत परीक्षण-स्थल तैयार करेगा। इससे अमरावती क्वांटम वैली पहल के तहत क्वांटम-सेफ पारिस्थितिकी तंत्र स्थापित होगा और देशभर में डिजिटल गोपनीयता और डेटा सुरक्षा बढ़ेगी।

विशाखापट्टनम में 30वें सीआईआई भागीदारी शिखर सम्मेलन में आंध्र प्रदेश के सूचना प्रौद्योगिकी, इलेक्ट्रॉनिकी और संचार और मानव संसाधन विकास मंत्री नारा लोकेश की उपस्थिति में समझौता ज्ञापन का आदान-प्रदान किया गया।

सी-डॉट के कार्यकारी उपाध्यक्ष डॉ. पंकज कुमार दलेला और आंध्र प्रदेश के सूचना प्रौद्योगिकी और संचार सचिव श्री भास्कर कटमनेनी ने समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए।

# अहमदाबाद मंडल का वर्ष 2025-26 में अप्रैल से अक्टूबर तक उत्कृष्ट प्रदर्शन

**29.18 मिलियन टन माल लदान किया और ₹3865 करोड़ से अधिक का राजस्व प्राप्त किया**

पश्चिम रेलवे के अहमदाबाद मंडल ने वित्तीय वर्ष 2025-26 के सात महीनों (अप्रैल-अक्टूबर 2025) में माल ढुलाई के क्षेत्र में अत्यंत उत्कृष्ट और उल्लेखनीय प्रदर्शन दर्ज किया है। कुल माल लोडिंग, औसत वैगन लोडिंग और माल राजस्व—तीनों में अहमदाबाद मंडल ने पिछले वर्ष की तुलना में उल्लेखनीय वृद्धि हासिल की है।

अक्टूबर 2025 तक अहमदाबाद मंडल ने कुल 29.181 मिलियन (MT) माल लोड किया, जो पिछले वर्ष की समान अवधि की तुलना में 5.92% अधिक है। जिसमें से गांधीधाम क्षेत्र से 22.779 मिलियन टन माल का सफलतापूर्वक परिवहन किया गया, जिससे मंडल को ₹3077.04 करोड़ का महत्वपूर्ण माल राजस्व प्राप्त हुआ। औसत वैगन लोडिंग में भी अहमदाबाद मंडल ने शानदार प्रदर्शन करते हुए 2842.49 वैगन प्रतिदिन लोड किए, जबकि पिछले वर्ष यह आंकड़ा 2699.71 वैगन प्रतिदिन था, जो 5.29% की वृद्धि है। माल राजस्व में भी मंडल का प्रदर्शन उत्कृष्ट रहा है और इस वित्तवर्ष में अक्टूबर 2025 तक कुल ₹3865.22 करोड़ का राजस्व अर्जित किया गया, जो पिछले वर्ष की समान अवधि की तुलना में 2.63% अधिक है।

अहमदाबाद मंडल की प्रमुख नई उपलब्धियाँ (अप्रैल-अक्टूबर 2025)

- खाराघोड़ा से अनंतनाग (जम्मू) के लिए पहली बार एक मिनी रेक इंडस्ट्रियल साल्ट लोड की गई, जिससे कुल ₹27.34 लाख का राजस्व अर्जित हुआ।
- साणंद स्थित MHPL फ्रेट टर्मिनल से पहली रेफ्रिजरेटेड (रीफर)

कंटेनर रैक पिपावाव पोर्ट के लिए लोड की गई जिससे ₹6.57 लाख का राजस्व प्राप्त हुआ।
- कडी को 247 संचालन वाले एक्सक्लूसिव कंटेनर रेल टर्मिनल (ECRT) के रूप में सफलतापूर्वक कमीशन किया गया, जिससे इनवर्ड और आउटवर्ड कंटेनर ट्रैफिक में उल्लेखनीय सुगमता और गति प्राप्त हुई।
- देवलिया स्थित वेस्टर्न केरियर ऋळळ में पहली बार टाइल्स से लोड चार कंटेनर रेक्स लोड की गईं, जिनसे मंडल को कुल ₹1.49 करोड़ का अतिरिक्त राजस्व प्राप्त हुआ।
- कांकड़िया (डङक्ष) से 20 इउठ वैगनों वाली राहत सामग्री की एक मिनी रेक 11 सितंबर 2025 को पंजाब के बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों (फिरोजपुर) के लिए भेजकर सामाजिक सरोकारों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को सिद्ध किया।

अहमदाबाद मंडल का कमोडिटी-वाइज प्रदर्शन (अप्रैल-अक्टूबर 2025)

- कंटेनर कमोडिटी में कुल 8442 रेक लोड किए गए और ₹1397.25 करोड़ का माल भाड़ा अर्जित किया गया।
- उर्वरक कमोडिटी में 2213 रेक लोड कर ₹1026.94 करोड़ का भाड़ा अर्जित किया गया।
- नमक (Salt) कमोडिटी में 1490 रेक लोड कर ₹597.26 करोड़ अर्जित किए गए।
- पेट्रोलियम (POL) कमोडिटी में 598 रेक लोड किए गए और ₹222.86 करोड़ का राजस्व अर्जित किया गया।
- कोयला (COAL) कमोडिटी में 344 रेक लोड किए गए और ₹221.42 करोड़ का राजस्व अर्जित किया गया।
- ऑटोमोबाइल्स कमोडिटी में कुल 1098 रेक लोड किए गए और ₹147.20 करोड़ का राजस्व प्राप्त हुआ।
- बेंटोनाइट कमोडिटी में 71 रेक लोड किए गए और ₹61.74 करोड़ का भाड़ा अर्जित किया गया।
- खाद्य तेल (EOIL) कमोडिटी में 206 रेक लोड किए गए और 59.41 करोड़ का राजस्व अर्जित किया गया।
- सीमेंट कमोडिटी में पहली बार 15 रेक लोड किए गए और कुल ₹7.60 करोड़ का माल भाड़ा अर्जित किया गया।
- अन्य (MISC ITEMS) कमोडिटी में 562 रेक लोड किए गए और ₹123.54 करोड़ का राजस्व प्राप्त हुआ।

गांधीधाम क्षेत्र (कच्छ जिला)

पश्चिम रेलवे के अहमदाबाद मंडल के अंतर्गत आने वाले गांधीधाम क्षेत्र ने वित्तीय वर्ष 2025-26 के अप्रैल से अक्टूबर 2025 की अवधि में माल ढुलाई के क्षेत्र में अत्यंत सराहनीय प्रदर्शन दर्ज किया है। इस अवधि में कुल 10,181 रेकों के माध्यम से 22.779 मिलियन टन माल का सफलतापूर्वक परिवहन किया गया, जिससे मंडल को ₹3077.04 करोड़ का महत्वपूर्ण माल राजस्व प्राप्त हुआ।

गांधीधाम क्षेत्र का कमोडिटी-वाइज प्रदर्शन (अप्रैल-अक्टूबर 2025)

- इस अवधि में 10,181 रेकों के माध्यम से 22.779 मिलियन टन माल का सफल परिवहन किया गया, जिससे मंडल को ₹3077.04 करोड़ का महत्वपूर्ण माल राजस्व प्राप्त हुआ।
- कंटेनर कमोडिटी में 5866 रेकों द्वारा 10.586 MT की लोडिंग कर ₹1069.47 करोड़ अर्जित किए गए।
- उर्वरक (Fertilizer) में 2117 रेक लोड कर 5.973 MT के परिवहन से ₹988.10 करोड़ राजस्व प्राप्त हुआ।
- कोयला कमोडिटी में 345 रेकों द्वारा 1.396 MT की ढुलाई कर ₹221.55 करोड़ अर्जित किए गए।
- एडिबल साल्ट में 470 रेकों द्वारा 1.12 MT की लोडिंग कर ₹214.83 करोड़ का राजस्व हासिल हुआ।
- इंडस्ट्रियल साल्ट में 479 रेकों द्वारा 1.727 MT की लोडिंग से ₹205.46 करोड़ का योगदान मिला।
- पेट्रोलियम में 337 रेकों के माध्यम से 0.838 MT की लोडिंग कर ₹155.30 करोड़ अर्जित हुए।
- छढक्ष में 238 रेकों से 0.276 MT की ढुलाई कर ₹65.66 करोड़ का राजस्व प्राप्त हुआ।
- बेंटोनाइट में 69 रेकों द्वारा 0.238 MT का परिवहन कर ₹61.08 करोड़ अर्जित किए गए।
- खाद्य तेल कमोडिटी में 184 रेकों के माध्यम से 0.393 MT की संयुक्त लोडिंग कर ₹55.25 करोड़ का राजस्व प्राप्त हुआ।
- इसके अतिरिक्त जिप्सम, क्लिंकर, मोलासिस, दालें, शुगर, बॉम्बो पल्प आदि अन्य कमोडिटीज ने भी कुल राजस्व में महत्वपूर्ण और सराहनीय योगदान दिया।

# उपभोक्ता मामले, खाद्य और सार्वजनिक वितरण मंत्रालय की हिंदी सलाहकार समिति की बैठक दिनांक 17 नवंबर, 2025 को सम्पन्न

(जीएनएस)।

उपभोक्ता मामले, खाद्य और सार्वजनिक वितरण तथा नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्री श्री प्रल्हाद जोशी की अध्यक्षता में उपभोक्ता मामले, खाद्य और सार्वजनिक वितरण मंत्रालय की हिंदी सलाहकार समिति की बैठक दिनांक 17 नवंबर, 2025 को अशोक होटल, नई दिल्ली में आयोजित की गई। इस बैठक में उपभोक्ता मामले खाद्य और सार्वजनिक वितरण राज्य मंत्री तथा समिति के उपाध्यक्ष, श्री बी. एल. वर्मा, माननीय संसद सदस्य (लोक सभा) श्री अजय भट्ट एवं माननीय संसद सदस्य (लोक सभा) श्रीमती डी. के. अरुणा तथा श्री संजीव चोपड़ा (सचिव), खाद्य और सार्वजनिक वितरण विभाग और श्रीमती निधि खरे (सचिव), उपभोक्ता मामले विभाग एवं समिति में नामित अन्य गैर सरकारी सदस्य भी उपस्थित रहे।

समिति के अध्यक्ष ने कहा कि देश में हिन्दी सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा है। हिंदी एक उन्नत, समृद्ध और वैज्ञानिक भाषा है। आज हिंदी

राजभाषा, जनभाषा और संपर्क भाषा, तीनों दायित्वों का निर्वहन करती है। अपनी भाषा में लिखना और कार्य करना अत्यंत सहज और सरल है। राजभाषा के रूप में, हिंदी सभी भारतीय भाषाओं से ऊर्जा प्राप्त करती है, अपना विकास सुनिश्चित करती है और पूरे देश को एकता और अखंडता के सूत्र में पिरोती है। निजीकरण, उदारीकरण और वैश्वीकरण के इस युग में, हिंदी का महत्व समय के साथ बढ़ता ही जा रहा है। इसी कारण, सूचना प्रौद्योगिकी, कृषि अभियांत्रिकी, स्वास्थ्य, खाद्य और उपभोक्ता सेवाओं को आम जनता तक पहुँचाने में राजभाषा हिंदी की महत्वपूर्ण भूमिका है।

समिति के उपाध्यक्ष श्री बी. एल. वर्मा ने कहा कि भाषा आम नागरिकों के लिए भावनात्मक जुड़ाव का कार्य करती है और हिन्दी इस जिम्मेदारी का निर्वहन भली भांति करती है। उन्होंने यह भी आश्वासन दिया कि समिति के सदस्यों द्वारा दिए गए सुझावों का पूर्ण अनुपालन सुनिश्चित किया जाएगा।

बैठक के अंत में यह निर्णय लिया गया कि मंत्रालय के सभी कार्यों में हिंदी के प्रगामी प्रयोग को अधिक प्रभावी, सरल और जनोन्मुखी तरीके से बढ़ावा देने के लिए बैठक में उपस्थित गणमान्य व्यक्तियों द्वारा दिए गए विभिन्न सुझावों और निदेशों को पूरा करने और उनका अनुपालन करने के लिए कदम उठाए जाएंगे।

# भारतीय दूरसंचार नियामक प्राधिकरण ने एसएमएस कंटेंट टेम्प्लेट में वेरिएबल्स की प्री-टैगिंग अनिवार्य करने के निर्देश जारी किए ताकि वाणिज्यिक संचार में इसके दुरुपयोग को रोका जा सके

(जीएनएस)।

भारतीय दूरसंचार नियामक प्राधिकरण (ट्राई) ने सभी एक्सेस प्रदाताओं को एक निर्देश जारी किया है जिसमें वाणिज्यिक संचार के लिए उपयोग में लाए जाने वाले एसएमएस कंटेंट टेम्प्लेट में सभी वेरिएबल हिस्सों की प्री-टैगिंग (पूर्व-टैगिंग) को अनिवार्य करने का निर्देश जारी किया है। वेरिएबल हिस्सों में आमतौर पर यूआरएल, एप्लिकेशन डाउनलोड लिंक या कॉलबैक नंबर जैसे तत्व शामिल होते हैं जो प्राप्तकर्ता से प्राप्तकर्ता या समय-समय पर बदल सकते हैं, जबकि संदेश यानि मैसेज का शेष पाठ स्थिर रहता है।

नई आवश्यकता के तहत, प्रेषकों को टेम्प्लेट पंजीकरण के समय प्रत्येक वेरिएबल फील्ड को स्पष्ट रूप से टैग करना होगा, यानी उन्हें यह निर्दिष्ट करना होगा कि वेरिएबल का उपयोग किस उद्देश्य के लिए किया जाएगा। उदाहरण के लिए, एक वेरिएबल को #यूआरएल# के रूप में टैग करने का तात्पर्य है कि उस वेरिएबल में एक यूआरएल शामिल है। जब तक इन वेरिएबल फील्ड को प्री-टैग नहीं किया जाता है तब तक एक्सेस प्रोवाइडर यह पहचानने या जाँच करने में असमर्थ होते हैं।

कि डाले गए मान श्वेतसूचीबद्ध डोमेन, नंबर या लिंक से हैं या नहीं। इसलिए, वेरिएबल फील्ड की स्वचालित पहचान और जाँच के लिए प्री-टैगिंग आवश्यक हो जाती है।

# लखनऊ जंक्शन स्टेशन पुनर्विकास कार्य

मुंबई,

लखनऊ जंक्शन स्टेशन के पुनर्विकास एवं मेजर अपग्रेडेशन कार्य के चलते 20 नवंबर से 22 दिसंबर, 2025 तक ब्लॉक लिया जाएगा।

पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी श्री विनीत अभिषेक द्वारा जारी प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, ब्लॉक के कारण प्रभावित ट्रेनों का विवरण निम्नानुसार है:

शॉर्ट टर्मिनेट/ओरिजिनेट होने वाली ट्रेनें:

- 22 नवंबर, 2025 से 20 दिसंबर, 2025 तक यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 20921 बांद्रा टर्मिनस - लखनऊ साप्ताहिक एक्सप्रेस लखनऊ जंक्शन के स्थान पर ऐशबाग स्टेशन पर शॉर्ट टर्मिनेट होगी।
- इसी प्रकार, 23 नवंबर, 2025 से 21 दिसंबर, 2025 तक यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 20922 लखनऊ - बांद्रा टर्मिनस साप्ताहिक एक्सप्रेस लखनऊ जंक्शन के स्थान पर ऐशबाग स्टेशन से प्रस्थान करेगी।

# आईआईटीएफ 2025 में एफसीआई मंडप भारत के उन्नत खाद्यान्न पारिस्थितिकी तंत्र एवं 2047 तक विकसित भारत के दृष्टिकोण को प्रदर्शित करता है

(जीएनएस)।

भारतीय खाद्य निगम (एफसीआई) ने भारत व्यापार संवर्धन संगठन (आईटीपीओ) द्वारा 14 से 27 नवंबर, 2025 तक भारत मंडपम के हॉल नंबर 6 में आयोजित हो रहे भारत अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेला (आईआईटीएफ) 2025 में एक विशेष मंडप स्थापित किया है, जो एक लचीले, आधुनिक एवं नागरिक-केंद्रित खाद्य सुरक्षा संरचना की दिशा में देश की सामूहिक प्रगति को दर्शाता है।

मंडप "किसानों का सम्मान, भारतीय खाद्य निगम का अभिमान" और "एक भारत, श्रेष्ठ भारत" की मार्गदर्शक भावना से प्रेरित है।

मंडप को भारत की खाद्यान्न यात्रा को प्रदर्शित करने के लिए डिजाइन किया गया है, जिसमें पारंपरिक भंडारण प्रथाओं से लेकर वैज्ञानिक, तकनीकी रूप से उन्नत भंडारण समाधानों जैसे कि साइलो को अपनाना शामिल है। यह प्रदर्शनी राष्ट्रीय खाद्यान्न की पर्याप्त मात्रा सुनिश्चित करने की दिशा में एफसीआई के योगदान तथा गुणवत्ता-संचालित, समावेशी, पारदर्शी, सतत खाद्य प्रबंधन प्रणाली में परिवर्तन और 2047 तक विकसित भारत के दीर्घकालिक दृष्टिकोण को आगे बढ़ाने की प्रतिबद्धता दर्शाती है।

केंद्रीय उपभोक्ता मामले, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण तथा नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्री श्री प्रहलाद जोशी ने आज एफसीआई पैवेलियन का दौरा किया और खुला बाजार बिक्री योजना-खुदरा/थोक को बढ़ावा देने के लिए एफसीआई की पहलों की सराहना की, ताकि वस्तु (गेहूं/चावल) की बाजार उपलब्धता/कीमत निरंतर/स्थिर रखा जा सके। साथ ही केंद्रीय मंत्री ने आम लोगों के लिए एफसीआई की पारदर्शिता, कुशल खाद्य वितरण और राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा के प्रति प्रतिबद्धता की भी प्रशंसा की।

# केंद्रीय कोयला एवं खान मंत्री श्री जी किशन रेड्डी जयपुर में भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण (जीएसआई) के अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार का उद्घाटन करेंगे

**'अतीत का पता लगाना, भविष्य को आकार देना जीएसआई के 175 वर्ष' विषय पर अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार 20 से 21 नवंबर 2025 तक आयोजित किया जाएगा**

(जीएनएस)।

खान मंत्रालय का भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण (जीएसआई), राष्ट्र के प्रति अपनी 175 वर्ष की सेवा के हिस्से के रूप में, 20-21 नवंबर 2025 को राजस्थान अंतर्राष्ट्रीय केंद्र (आरआईसी), जयपुर में 'अतीत का पता लगाना, भविष्य को आकार देना: जीएसआई के 175 वर्ष' विषय पर एक अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन कर रहा है।

इस अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार के उद्घाटन समारोह में केंद्रीय कोयला एवं खान मंत्री श्री जी. किशन रेड्डी, खान मंत्रालय में सचिव श्री पीयूष गोयल और राजस्थान सरकार के खान एवं पेट्रोलियम विभाग के प्रधान सचिव श्री टी. रविकांत की गरिमामयी उपस्थिति रहेगी।

इस सेमिनार का नेतृत्व जीएसआई के महानिदेशक एवं संरक्षक श्री असित साहा, तथा पश्चिमी क्षेत्र के अतिरिक्त महानिदेशक एवं विभागाध्यक्ष एवं सेमिनार के अध्यक्ष श्री विजय वी. मुगल करेंगे, साथ ही वरिष्ठ अधिकारी, प्रख्यात भूवैज्ञानिक और देश तथा विदेशों से प्रतिनिधि भी इसमें भाग लेंगे।

वर्ष 1851 में स्थापित, जीएसआई ने भूवैज्ञानिक मानचित्रण, खनिज अन्वेषण, महत्वपूर्ण एवं रणनीतिक खनिजों की पहचान, भू-खतरों के अध्ययन और राष्ट्रीय विकास हेतु भूवैज्ञानिक अनुसंधान को आगे बढ़ाने में एक आधारभूत भूमिका निभाई है। उभरती चुनौतियों, तकनीकी प्रगति और भूविज्ञान के भविष्य की दिशा पर विचार-विमर्श करने के लिए भारत और विदेशों के विशेषज्ञ इस अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार में शामिल होंगे।

इस दो दिवसीय तकनीकी कार्यक्रम में 9 पूर्ण व्याख्यान, 19 विशेष व्याख्यान और 11 विषयगत क्षेत्रों में 300 से अधिक वैज्ञानिक एवं पोस्टर प्रस्तुतियाँ शामिल हैं। ब्रिटिश जियोलॉजिकल सर्वे (बीजीएस), यूनाइटेड स्टेट्स जियोलॉजिकल सर्वे (यूएसजीएस), जियोसाइंस ऑस्ट्रेलिया, और लैंकेस्टर यूनिवर्सिटी (यूके), यूनिवर्सिटी ऑफ मिशिगन (यूएसए), यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्सास (यूएसए) और इटैलियन नेशनल रिसर्च काउंसिल जैसे प्रमुख विश्वविद्यालयों के प्रख्यात वैज्ञानिक भी इस सेमिनार में भाग लेंगे।

इस सेमिनार के दौरान, प्रमुख संस्थानों और उद्योगों द्वारा अत्याधुनिक तकनीकों, भू-स्थानिक उपकरणों और नवोन्मेषी समाधानों को प्रस्तुत करने वाली एक प्रदर्शनी भी आयोजित की जाएगी। इस कार्यक्रम में आईआईटी बॉम्बे और आईआईटी खड़गपुर के साथ समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर भी शामिल होंगे, जिससे अग्रणी भूविज्ञान अनुसंधान और क्षमता निर्माण में सहयोग को मजबूती मिलेगी।

यह अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार वैज्ञानिक उत्कृष्टता, सतत संसाधन विकास और वैश्विक ज्ञान आदान-प्रदान के प्रति जीएसआई की विरासत की प्रतिबद्धता और राष्ट्र के प्रति 175 वर्षों की समर्पित सेवा की पुष्टि करता है।

# केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री श्री जेपी नड्डा ने रोगाणुरोधी प्रतिरोध 2.0 पर राष्ट्रीय कार्य योजना का शुभारंभ किया

(जीएनएस)।

केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री श्री जगत प्रकाश नड्डा ने आज रोगाणुरोधी प्रतिरोध पर राष्ट्रीय कार्य योजना 2025-29 के दूसरे संस्करण का शुभारंभ किया। इस अवसर पर प्रमुख वैज्ञानिक सलाहकार डॉ. ए.के. सूद, केंद्रीय स्वास्थ्य सचिव श्रीमती पुण्य सलिला श्रीवास्तव, स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग के सचिव डॉ. राजीव बहल और स्वास्थ्य सेवा महानिदेशक (डीजीएचएस) डॉ. सुनीता शर्मा भी उपस्थित थीं।

श्री नड्डा ने कहा कि रोगाणुरोधी प्रतिरोध (एएमआर) जन स्वास्थ्य से जुड़ी प्रमुख समस्या है जिसका समाधान सामूहिक कार्रवाई से ही संभव है। उन्होंने कहा कि रोगाणुरोधी प्रतिरोध की यह यात्रा वर्ष 2010 में प्रारंभिक चर्चाओं के साथ शुरू हुई थी, जिसके बाद वर्ष 2017 में रोगाणुरोधी प्रतिरोध पर पहली राष्ट्रीय कार्य योजना की शुरूआत की गई।

श्री नड्डा ने एएमआर से जुड़ी चुनौतियों की गंभीरता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि एएमआर शल्य चिकित्सा प्रक्रियाओं, कैंसर के इलाज और अन्य महत्वपूर्ण स्वास्थ्य सेवाओं में गंभीर जोखिम पैदा करता है, उन्होंने आगे कहा कि एंटीबायोटिक दवाओं के अत्यधिक उपयोग और दुरुपयोग से सुधारात्मक उपायों की तत्काल आवश्यकता को बल मिला है। इस संबंध में विभिन्न मंत्रालयों की ओर से कई महत्वपूर्ण पहल की गई हैं।

श्री नड्डा ने कहा कि एनएपी-एएमआर 2.0, एएमआर से संबंधित प्रयासों में स्वामित्व बढ़ाकर, अंतर-क्षेत्रीय समन्वय को मजबूत करके और निजी क्षेत्र के साथ मजबूत जुड़ाव सुनिश्चित करके, पहले एनएपी-एएमआर की कमियों को दूर करता है।





एनएपी एएमआर 2.0 के तहत लागू की जाने वाली एएमआर नियंत्रण की प्रमुख रणनीतियों पर जोर देते हुए, उन्होंने जागरूकता, शिक्षा और प्रशिक्षण बढ़ाने के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने प्रयोगशाला क्षमता बढ़ाने और स्वास्थ्य सेवा केंद्रों में संक्रमण नियंत्रण की आवश्यकता पर भी प्रकाश डाला। श्री नड्डा ने चुनौतियों का तुरंत समाधान करने के लिए हितधारकों की नियमित बैठकों के महत्व पर भी जोर दिया।

डॉ. ए.के. सूद ने कहा कि एनएपी-एएमआर 2.0 एक अधिक सुसंगत कार्ययोजना तैयार करने की दिशा में एक समयोचित पहल है, जिसे विश्व स्वास्थ्य संगठन के 18-24 नवंबर तक आयोजित विश्व एएमआर जागरूकता सप्ताह के पहले दिन जारी किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि भारत इस पहल को वैश्विक स्तर पर आगे बढ़ाने वाले अग्रणी देशों में से एक है, और एएमआर एक महामारी की तरह है जो एशिया और अफ्रीका सहित कई विकासशील देशों को प्रभावित कर रही है।

डॉ. सूद ने एएमआर के खतरे से निपटने के लिए भारत द्वारा उठाए गए कुछ कदमों पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि केरल और गुजरात बिना डॉक्टरी सलाह के एंटीबायोटिक दवाओं की बिक्री पर प्रतिबंध लगाने वाले पहले राज्य हैं। कुछ रोगाणुरोधी दवाओं और कीटनाशकों के फसलों में इस्तेमाल पर भी प्रतिबंध लगा दिया गया है। उन्होंने कहा, "भारत एएमआर इनोवेशन हब की स्थापना राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय हितधारकों को शामिल करते हुए एक नवीन प्रौद्योगिकी मंच बनाने के लिए की गई थी। इसने संसाधन जुटाने, नवाचार लाने और विभिन्न हितधारकों के बीच सहयोग बढ़ाने में मदद की है।"

रोगाणुरोधी प्रतिरोध (एएमआर) को एक वैश्विक स्वास्थ्य खतरे के रूप में पहचाना गया है जिसके गंभीर स्वास्थ्य, राजनीतिक और आर्थिक निहितार्थ हैं। एएमआर के कारण उपचार में देरी होती है जिससे प्रतिरोधी सूक्ष्मजीवों के फैलने का खतरा बढ़ जाता है और स्वास्थ्य देखभाल की लागत बढ़ जाती है, तथा परिवारों और समाज पर आर्थिक बोझ बढ़ जाता है। एएमआर शल्य चिकित्सा, कैंसर उपचार और अंग प्रत्यारोपण जैसी प्रक्रियाओं की सुरक्षा और प्रभावशीलता को खतरे में डालता है, जिससे न केवल आधुनिक चिकित्सा में हुई प्रगति बल्कि वैश्विक और राष्ट्रीय स्तर पर विकास और अर्थव्यवस्था के प्रभावित होने की भी संभावना है।

एएमआर को राष्ट्रीय प्राथमिकता माना गया है और केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय ने एएमआर नियंत्रण के लिए कई कदम उठाए हैं। एएमआर नियंत्रण पर राष्ट्रीय कार्यबल का गठन वर्ष 2010 में किया गया था, जिसके परिणामस्वरूप वर्ष 2011 की शुरूआत में एएमआर नियंत्रण पर राष्ट्रीय नीति विकसित की गई। अप्रैल 2017 में, वैश्विक कार्य योजना (जीएपी) के अनुरूप विकसित रोगाणुरोधी प्रतिरोध पर राष्ट्रीय कार्य योजना (एनएपी-एएमआर) शुरू की गई, जिसे अगले 5 वर्षों (2017-2021) में लागू किया जाना था।

हालांकि एएमआर एक बहुक्षेत्रीय समस्या है और इसके नियंत्रण के लिए एक स्वास्थ्य दृष्टिकोण की आवश्यकता है, फिर भी यह स्वास्थ्य दृष्टिकोण तभी सफल हो सकता है जब प्रत्येक क्षेत्र, अर्थात मानव, पशु, कृषि और पर्यावरण क्षेत्र, एएमआर को नियंत्रित करने के लिए कार्रवाई हेतु प्रतिबद्ध हों।

# तेज रफ्तार कार ने बाइक में मारी जोरदार टक्कर, हादसे में युवक की मौत

(जीएनएस)।

पीलीभीत पूरनपुर। तेज रफ्तार का कहर,तेज रफ्तार कार ने बाइक सवार जुल्फिकार को मारी जोरदार टक्कर - सड़क हादसे में युवक की दर्दनाक मौत, चालक फरार, वढ26व 8914 नंबर की कार को जब्त कर लिया गया है, पुलिस मामले की जांच कर रही है।

मंगलवार को सुबह एक तेज रफ्तार कार ने बाइक सवार को टक्कर मारी, हादसे में युवक की मौत हो गई।

जनपद के थाना सेहरामऊ उत्तरी क्षेत्र के रायपुर बिचपुरी में सुबह एक सड़क हादसे ने सबको सन्न कर दिया। सड़क किनारे बाइक पर खड़े युवक जुल्फिकार को एक तेज रफ्तार कार ने जोरदार टक्कर मार दी, जिससे बाइक के परखच्चे उड़ गए। घायल अवस्था में अस्पताल ले जाते समय जुल्फिकार की मौत हो गई। प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि कार पूरी तरह अनियंत्रित थी, चालक ने टक्कर मारते ही वाहन छोड़कर फरार हो गया। पुलिस ने घटनास्थल से कार (नंबर वढ26व 8914) कब्जे में ले ली है। मृतक के परिवार में कोहराम मच गया है, गांव में आक्रोश का माहौल है।






घटना सुबह करीब 9 बजे की बताई जा रही है। रायपुर बिचपुरी निवासी जुल्फिकार (उम्र 28 वर्ष) स्थानीय मोटरसाइकिल की दुकान पर काम करता था। प्रत्यक्षदर्शी ग्रामीणों के अनुसार, वह सड़क किनारे कुछ साथियों से बातचीत कर रहा था, जब अचानक तेज रफ्तार कार ने बिना ब्रेक लगाए टक्कर मार दी। बाइक सड़क पर बिखर गई, जुल्फिकार सड़क पर लहूलुहान गिर पड़ा। ग्रामीणों ने तुरंत एम्बुलेंस बुलाई, लेकिन अस्पताल पहुंचने से पहले ही उसकी सांसें थम गईं।

प्रारंभिक जानकारी में कार चलाने वाला क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक जोगराजपुर शाखा का प्रबंधक बताया जा रहा,लेकिन पहचान की पुष्टि नहीं हुई।

थाना सेहरामऊ थाना अध्यक्ष संजय कुमार सिंह ने बताया कि सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंच गई, और कार को कब्जे में ले लिया। मृतक के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम हेतु भेजा गया।

# तालाब किनारे घायल तेंदुए की दर्दनाक मौत

(जीएनएस)।

पीलीभीत,बरखेड़ा थाना क्षेत्र के पिपरा खास गांव में मंगलवार सुबह एक तेंदुए का घायल अवस्था में मिलना व फिर उसकी मौत ने इलाके में सनसनी फैला दी। तालाब के किनारे बेसुध पड़ा तेंदुआ तड़पता रहा, लेकिन वन विभाग की टीम सूचना के दो घंटे बाद पहुंची। तब तक जान जा चुकी थी। पोस्टमार्टम में गर्दन पर गहरा जख्म व कीड़े मिले, जो कटीले तारों में फंसने का संकेत देते हैं। ग्रामीणों ने विभाग पर लापरवाही का आरोप लगाया - 20 दिनों से तेंदुओं की मौजूदगी की शिकायतें थीं, लेकिन कार्रवाई न हुई।

घटना सुबह करीब 5 बजे की बताई जा रही है। पिपरा खास के ग्रामीणों ने तालाब के पास खड़ंजे पर तेंदुए को देखा। शोर मचने पर वह कूदकर किनारे गिर पड़ा। पास पहुंचे ग्रामीणों को जख्मी हालत दिखी - गर्दन पर गहरा घाव, जिसमें कीड़े रेंग रहे थे। डर के मारे कोई छू न सका। सूचना मिलते ही वन विभाग को फोन किया, लेकिन दो घंटे बाद टीम आई। तब तेंदुआ मरा पड़ा था। रेस्क्यू प्लान बनने से पहले ही सब खत्म। शव को जिला मुख्यालय लाया गया, जहां प्रभारी डीएफओ रमेश चौहान के निर्देश पर जांच शुरू।



ग्रामीणों का गुस्सा फूटा - "सूचना दो घंटे पहले दी, लेकिन अफसर सोते रहे। तेंदुआ तड़पता रहा, जान बच सकती थी। 20 दिन से दो तेंदुए दिख रहे, शिकायत की लेकिन संजीदगी न दिखी।" एक ग्रामीण ने कहा, "खेतों के कटीले तारों में फंस गया लगता, लेकिन विभाग जागा ही न।" प्रभारी डीएफओ रमेश चौहान ने बताया, "गर्दन का जख्म गहरा, कीड़े लगे। कटीले तारों में उलझने का शक। पोस्टमार्टम रिपोर्ट से साफ होगा। रेस्क्यू टीम तैनात, इलाके में सतर्कता बरतें।"

पोस्टमार्टम दोपहर से शाम तक चला। डॉ. दक्ष गंगवार के नेतृत्व में तीन चिकित्सकों की टीम ने जिला मुख्यालय में शव की जांच की। वन्यजीव संरक्षण के तहत कार्रवाई जारी। जिले में तेंदुओं की बढ़ती सक्रियता चिंता का विषय - ग्रामीण सतर्क रहें। रिपोर्ट आने पर अपडेट।

# दो-दो डिप्टी सीएम सहित 13 विधायकों को मिले एक जैसे वोट, कांग्रेस ने उठाए सवाल

(जीएनएस)।

बिहार विधानसभा चुनाव 2025 के परिणाम घोषित होने के बाद से ही एक अजीबोगरीब संयोग चर्चा का विषय बना हुआ है। सत्ताधारी दल के पांच प्रमुख विधायकों को मिले वोटों की संख्या में आश्चर्यजनक समानता देखने को मिली है। इनमें दो उपमुख्यमंत्री, एक कैबिनेट मंत्री और दो अन्य विधायक शामिल हैं।

इस स्थिति ने विपक्षी दल, खासकर कांग्रेस, को चुनाव आयोग की भूमिका और मतगणना प्रक्रिया पर सवाल उठाने का अवसर दे दिया है। यह घटनाक्रम बिहार की चुनावी राजनीति में एक नया विवाद खड़ा कर रहा है, जहां विपक्षी दल धांधली और अनियमितताओं के आरोप लगा रहे हैं।

वोटों में समानता और कांग्रेस के सवाल

डिप्टी सीएम सम्राट चौधरी (122480)

डिप्टी सीएम विजय कुमार सिन्हा (122408)

मंत्री नीरज कुमार सिंह (122491)



बिरेंद्र कुमार (122773)

पूर्व मंत्री कृष्णा कुमार ऋषि (122494)

इन पांच बीजेपी प्रत्याशीयों को मिले वोटों के आंकड़े एक-दूसरे के बेहद करीब हैं। इन आंकड़ों में कुछ सौ वोटों का ही अंतर है, जो सामान्य चुनावी रुझानों से थोड़ा हटकर लगता है। कांग्रेस ने इस पैटर्न को आधार बनाकर चुनाव आयोग पर गंभीर आरोप लगाए हैं, यह दावा करते हुए कि यह महज संयोग नहीं हो सकता। पार्टी ने यह भी मांग की है कि इन सीटों पर फिर से वोटों की गिनती की जाए और पूरी प्रक्रिया की गहन जांच की जाए ताकि पारदर्शिता सुनिश्चित हो सके।

इन विधायकों लगभग 1 लाख के करीब वोट

तारकिशोर प्रसाद: 100255 वोट

सुरेंद्र मेहता: 100343 वोट

संजय कुमार पांडे: 100044 वोट

रंजन कुमार: 100477 वोट

संजय कुमार: 100485 वोट

जीबेश कुमार: 100496 वोट

रोहित पांडे: 100770 वोट

रुहैल रंजन: 100487 वोट

ये भी पढ़ें: ईं१ उँ४ल्लं५: 25 साल में पहली बार शून्य पर निर्दलीय! बिना सिंबल वाले क्यों साफ हुए मैदान से? पढ़ें 5 कारण

प्रशांत किशोर ने भी उठाया सवाल

जनसुराज के प्रमुख और चुनावी रणनीतिकार प्रशांत किशोर ने बिहार विधानसभा चुनाव परिणामों पर गंभीर सवाल उठाए हैं, खासकर मधुबनी विधानसभा क्षेत्र के नतीजों को लेकर। उनका दावा है कि इस सीट पर उपेंद्र कुशवाहा की पार्टी के उम्मीदवार की जीत सवालों के घेरे में है। किशोर ने आश्चर्य व्यक्त किया कि एनडीए के प्रत्याशी को 1 लाख से अधिक वोट कैसे मिल गए, जबकि उनके अनुसार, मधुबनी में उपेंद्र कुशवाहा की पार्टी के चुनाव चिन्ह को जानने वाले मतदाताओं की संख्या बहुत कम होगी। यह बयान चुनाव परिणामों की प्रामाणिकता और ईवीएम व मतगणना प्रक्रिया की विश्वसनीयता पर बड़ा प्रश्नचिह्न लगाता है, जिससे राजनीतिक गलियारों में हलचल मच गई है।

# रेलवे ने थोक सीमेंट के माल ढुलाई शुल्क में कटौती की, निर्धन और मध्यम वर्गीय परिवारों के लिए किफायती आवास में सहायता मिलेगी

**नई नीति के तहत निर्बाध डोर-टू-डोर लॉजिस्टिक्स समाधान के लिए अनुकूलित कंटेनर और नए बल्क सीमेंट टर्मिनल**

(जीएनएस)।

केंद्रीय रेल, सूचना एवं प्रसारण, तथा इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव ने आज कंटेनरों में थोक सीमेंट की दरों को विवेकपूर्ण बनाने और थोक सीमेंट टर्मिनलों के लिए नीति का अनावरण किया। यह नीति सीमेंट परिवहन के लिए रेलवे सुधारों का एक हिस्सा है।

श्री अश्विनी वैष्णव ने नई दिल्ली स्थित रेल भवन में नीति का अनावरण करते हुए इस क्षण को एक क्रांतिकारी बदलाव बताया। उन्होंने कहा कि इन सुधारों से मध्यम और निर्धन परिवारों के लिए अपने सपनों का घर बनाते समय सीमेंट की लागत कम हो जाएगी। नई नीति के अनुसार, दूरी और भार के स्लैब हटा दिए गए हैं। श्री वैष्णव ने बताया कि नई दर को फ्लैट सकल टन किलोमीटर पर 0.90 रुपये प्रति टन प्रति किलोमीटर कर दिया गया है।

श्री अश्विनी वैष्णव ने कहा कि टैंक कंटेनर थोक सीमेंट परिवहन के लिए एक संपूर्ण प्रदूषण मुक्त लॉजिस्टिक्स समाधान साबित होंगे। उन्होंने कहा कि भारत अब विश्व का दूसरा सबसे बड़ा मालवाहक है, जिसने अमेरिका को पीछे छोड़ दिया है। रेल नेटवर्क का विस्तार 4 किलोमीटर प्रतिदिन (2004-14 के दौरान) से बढ़कर 12-14 किलोमीटर प्रतिदिन हो गया है, जिससे यह तीन गुना से भी अधिक बढ़ गया है। ब्रॉड-गेज रेल नेटवर्क अब लगभग 100 प्रतिशत विद्युतीकृत है। श्री वैष्णव ने कहा कि वर्तमान में देश भर में 1,300 से अधिक अमृत स्टेशन विकसित किए जा रहे हैं।

टैंक कंटेनरों में थोक सीमेंट के लिए माल ढुलाई का विवेकीकरण

नई दर संरचना को सरल और युक्तिसंगत बनाया गया है, जिसमें वास्तविक टन भार पर आधारित शुल्क लागू किए गए हैं, जिसकी गणना ट्रेन के सकल टन किलोमीटर (जीटीकेएम) के रूप में की जाती है। व्यापार सुगमता बढ़ाने के लिए, पिछली दूरी और भार स्लैब को हटा दिया गया है। संशोधित प्रणाली के तहत, वास्तविक दूरी तय करने पर 0.90 रुपये प्रति टन प्रति किलोमीटर की एक समान दर से माल ढुलाई ली जाती है।

यह नीति थोक सीमेंट के लिए कुशल मल्टी मॉडल, समग्र लॉजिस्टिक्स को बढ़ावा देने के लिए टैंक कंटेनरों के उपयोग को बढ़ावा देती है। टैंक कंटेनर थोक सीमेंट परिवहन के लिए एक प्रभावी संपूर्ण लॉजिस्टिक्स समाधान है और "मेक इन इंडिया" का एक गौरवशाली उत्पाद है। इसे 20 फीट .8 फीट .8.5 फीट के मानक आयामों के साथ डिजाइन किया गया है, जो 26 टन की पेलोड क्षमता और 31 टन का सकल भार प्रदान करता है। प्रत्येक कंटेनर केवल 25-30 मिनट के लोडिंग और अनलोडिंग समय के साथ कुशल संचालन की अनुमति देता है। इसका डिजाइन इसे निर्बाध मल्टी मॉडल परिवहन— ट्रेन से ट्रेलर और वापस ट्रेन तक आसानी से पहुंचा जा सकता है—के लिए आदर्श बनाता है जिससे उत्पादन बिंदु से उपभोग बिंदु तक सुचारू वितरण संभव होता है।

थोक सीमेंट टर्मिनलों के लिए नीति

विनिर्माण संयंत्रों से उपभोग केंद्रों के निकट टर्मिनलों तक विशेष वैगनों का उपयोग करने के जरिए थोक सीमेंट का परिवहन लागत-प्रभावी और पर्यावरण-अनुकूल दोनों है। कुशल लॉजिस्टिक्स की ओर इस बदलाव को और बढ़ावा देने के लिए, भारतीय रेलवे "बल्क सीमेंट टर्मिनल" नीति के तहत देश भर में बल्क सीमेंट टर्मिनलों के विकास को सुगम बनाएगा, जिससे सीमेंट का संचालन, भंडारण और वितरण अधिक सुचारू रूप से हो सकेगा।

निर्बाध लॉजिस्टिक्स सुनिश्चित करने के लिए, बल्क सीमेंट टर्मिनलों का निर्माण, संचालन और रखरखाव रेलवे नेटवर्क से सीधे संपर्क के साथ किया जाएगा। ये टर्मिनल हॉपर, साइलो, बैगिंग प्लांट और अन्य संबंधित अवसंरचना जैसी आवश्यक सुविधाओं से सुसज्जित होंगे जिससे कि बल्क सीमेंट के कुशल संचालन, भंडारण और वितरण में सहायता मिल सके।

यह नीति कई प्रमुख लाभ प्रदान करती है, जिनमें सीमेंट परिवहन लागत में उल्लेखनीय कमी और सड़क परिवहन की तुलना में कार्बन उत्सर्जन में महत्वपूर्ण गिरावट शामिल है। इससे पर्यावरणगत स्थिरता को बढ़ावा मिलता है और सड़कों पर भीड़भाड़ कम होती है। यह एक ही खेप में बड़ी मात्रा में सीमेंट की ढुलाई को संभव बनाती है और पैकेजिंग की आवश्यकताओं को कम करती है, साथ ही रिसाव से होने वाले सामग्री के नुकसान को भी कम करती है। इसके अतिरिक्त, यह नीति मशीनीकृत लोडिंग और अनलोडिंग के माध्यम से तेज टर्नअराउंड समय सुनिश्चित करती है, जिससे सीमेंट लॉजिस्टिक्स में समग्र दक्षता बढ़ती है।

# ब्राजील के बेलेम में आयोजित कॉप 30 में भारत शामिल; अंतरराष्ट्रीय बाघ गठबंधन पर उच्च-स्तरीय मंत्रिस्तरीय सभा में देश का पक्ष प्रस्तुत किया

**भारत ने कॉप 30 में बाघ संरक्षण पर वैश्विक नेतृत्व दोहराया; 2026 में नई दिल्ली में वैश्विक बाघ शिखर सम्मेलन की मेजबानी की घोषणा की**

**भारत बाघ संरक्षण को जलवायु शमन, अनुकूलन और पारिस्थितिकी तंत्र लचीलेपन से सीधे जोड़ता है; वन्यजीव संरक्षण अपने सबसे प्राकृतिक रूप में जलवायु कार्रवाई है: श्री भूपेंद्र यादव**

(जीएनएस)।

केंद्रीय पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्री श्री भूपेंद्र यादव ने 17.11.2025 को ब्राजील के बेलेम में आयोजित यूएनएफसीसीसी कॉप 30 में अंतरराष्ट्रीय बाघ गठबंधन (आईबीसीए) पर उच्च-स्तरीय मंत्रिस्तरीय सभा को संबोधित किया। उन्होंने एकीकृत जलवायु और जैव विविधता कार्रवाई के एक भाग के रूप में पैंथेरा वंश की प्रजातियों (बाघ, शेर, तेंदुआ, जगुआर आदि) और उनके आवासों की रक्षा के लिए नए सिरे से वैश्विक सहयोग का आ'ान किया। इस कार्यक्रम में नेपाल सरकार के कृषि एवं पशुधन मंत्री डॉ. मदन प्रसाद परियार भी उपस्थित थे।






श्री भूपेंद्र यादव ने इस कार्यक्रम की मेजबानी के लिए ब्राजील को धन्यवाद दिया। उन्होंने इस विषय - पैंथेरा वंश की सुरक्षा, जलवायु और जैव विविधता की सुरक्षा - की सामयिकता पर ध्यान दिया। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि आज की पारिस्थितिक चुनौतियाँ आपस में प्रगाढ़ता से जुड़ी हुई हैं और इनके लिए जुड़े हुए समाधानों की आवश्यकता है। श्री यादव ने कहा कि पैंथेरा वंश के जीव सर्वोच्च शिकारी, पारिस्थितिक संतुलन के नियामक और पारिस्थितिकी तंत्र के स्वास्थ्य के प्रहरी हैं। उन्होंने कहा, "जहाँ पैंथेरा वंश के जीव पनपते हैं, वहाँ जंगल अधिक स्वस्थ होते हैं, घास के मैदान पुनर्जीवित होते हैं, जल प्रणालियाँ कार्य करती हैं, और जीवित परिदृश्यों में कार्बन कुशलतापूर्वक संग्रहीत होता है।" उन्होंने यह भी कहा कि पैंथेरा वंश की आबादी में गिरावट से पारिस्थितिक तंत्र अस्थिर होते हैं, जलवायु परिवर्तन के प्रति लचीलापन कमजोर होता है, और प्राकृतिक कार्बन सिंक नष्ट होते हैं।

'बिग कैट लैंडस्केप्स' को 'प्रकृति-आधारित जलवायु समाधान' बताते हुए, मंत्री महोदय ने भविष्य के राष्ट्रीय विकास लक्ष्यों (एनडीसी) में प्रकृति-आधारित जलवायु कार्रवाई को केंद्रीय स्थान देने का आ'ान किया। उन्होंने कहा, "जिसे हम प्रायः 'वन्यजीव संरक्षण' कहते हैं, वह वास्तव में अपने सबसे प्राकृतिक रूप में जलवायु कार्रवाई है।" उन्होंने बताया कि बिग कैट लैंडस्केप्स का संरक्षण कार्बन पृथक्करण, जलग्रहण संरक्षण, आपदा जोखिम न्यूनीकरण, जलवायु अनुकूलन और सतत आजीविका को सीधे तौर पर मजबूत करता है।

मंत्री महोदय ने तकनीकी सहायता, मानकीकृत उपकरणों, क्षमता निर्माण, दक्षिण-दक्षिण सहयोग और मिश्रित वित्त एवं जैव विविधता-कार्बन क्रेडिट तंत्रों के माध्यम से देशों को समर्थन देने की आईबीसीए की क्षमता की जानकारी दी।

श्री यादव ने उपस्थित लोगों को दुनिया की सात बिग कैट प्रजातियों में से पाँच के निवास स्थान के रूप में भारत की भूमिका के बारे में बताया और देश की प्रमुख संरक्षण सफलताओं की जानकारी दी। मंत्री महोदय ने कहा, "भारत ने लक्ष्य समय-सीमा से पहले ही अपने बाघों की आबादी दोगुनी कर ली है और हमारे एशियाई शेरों की आबादी में लगातार वृद्धि हो रही है।" उन्होंने कहा कि भारत ने बाघों, शेरों, तेंदुओं और हिम तेंदुओं की राष्ट्रव्यापी जनसंख्या आकलन के माध्यम से